# कामकाजी महिला

वर्ष 2 अंक 5 जून, 1990 (विशेषांक) मूल्य : दो रुपये

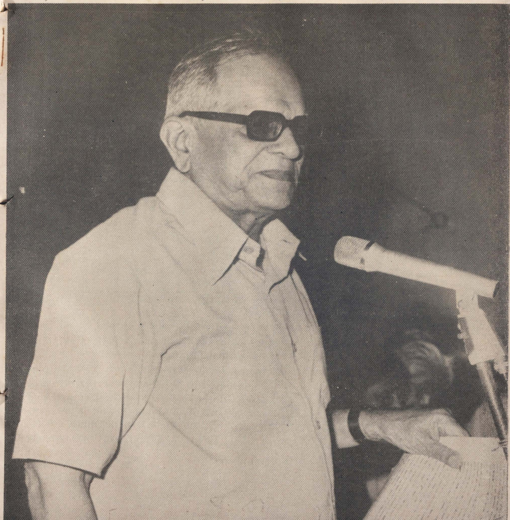

# कामरेड बी० टी० रणदिवे की आखिरी यात्रा : महान क्रांतिकारी को हार्दिक विदाई

**अशोक धवले**

"आज हम कामरेड बी. टी. आर. को अपनी अंतिम विदाई दे रहे हैं। उनके चले जाने से भारतीय साम्यवादी एवं प्रजातांत्रिक आंदोलन में, जो वर्षों की कड़ी मेहनत से बना है, एक शून्य पैदा हो गया है, जिसका भरा जाना आसान नहीं होगा। हमने हमेशा ही बी. टी. आर. को एक बड़े भाई के रूप में देखा जो एक नए भारत के निर्माण के लिए मजदूर आंदोलनों में हमेशा हमारे साथ रहे, हमारा मार्गदर्शन किया। क्षति कितनी भी बड़ी क्यों न हो, अभी निराशा के अंधेरे में खो जाना, कामरेड बी. टी. आर. के आदर्शों को धोखा देना होगा। ये आदर्श, जिसके लिए हम साथ लड़े हैं और थोड़ी सफलता भी हमें मिली है। अतः आइए हम यह शपथ लें कि हम उनके आदर्शों को आगे बढ़ायेंगे, अपने देश में एक मजबूत मजदूर एवं जनवादी आंदोलन तैयार करेंगे। अपने बिछड़े नेता के प्रति यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।"

ये वो शब्द हैं, जो सी. पी. आइ. (एम) के महासचिव, कामरेड ई. एम. एस. नम्बूदिरिपाद ने पोलिट ब्यूरो के सदस्य, सीटू के अखिल भारतीय अध्यक्ष महान मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारक, छः दशकों से भारतीय मजदूर आंदोलन के स्तम्भ कामरेड बी. टी. आर. की श्रद्धांजलि में कहे।

छः अप्रैल सुबह 3 बजकर दस मिनट पर कैंसर की लम्बी बीमारी से जूझते हुए कामरेड बी. टी. आर. हमसे दूर चले गए। एक सर्मापत क्रांतिकारी जीवन जो आदर्शनीय कम्युनिस्ट आंदोलन का अभिन्न अंग था, समाप्त हो गया। अद्भुत इच्छा-शक्ति के मूर्त रूप कामरेड बी. टी. आर. दर्द से तड़पते हुए भी आखिर तक पार्टी की गतिविधियों से जुड़े रहे। सिर्फ दो सप्ताह पहले कामरेड सरोज मुखर्जी के निधन पर श्रद्धांजलि देते हुए बी. टी. आर. ने कहा था—का० मुखर्जी का जीवन उस पीढ़ी से जुड़ा था, जो अब शीघ्र खत्म हो रही है। लेकिन यह पीढ़ी हमेशा ही आधुनिक वैचारिक बदलावों, समस्याओं, पार्टी की गतिविधियों और मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल

का० बी. टी. आर. को अन्तिम विदाई।

सिद्धांतों को समझती-बूझती रही है। इन शब्दों में एक क्रूर भविष्यवाणी छिपी थी।

7 अप्रैल को सुबह साढ़े 9 बजे सी. पी. आइ. (एम) के पोलिट ब्यूरो के सदस्य कामरेड ई. बालानंदन, सेंट्रल सेक्रेटेरियट सदस्य सीताराम येचुरी, बी. टी. आर. के पुत्र उदय रणदिवे, एवं बम्बई के अन्य सी. पी. आइ. (एम) सदस्यों ने कामरेड बी. टी. आर. के पार्थिव शरीर को केंद्रीय बम्बई स्थित "जनशक्ति" दफ्तर लाया। साढ़े तीन

बजे तक पार्टी के लाल झंडे से ढका कामरेड बी. टी. आर. का पार्थिव शरीर लोगों के दर्शन के लिए रखा गया, सी.पी. आइ. (एम) के भारत भर के गणमान्य नेता अपने प्रिय नेता की अन्तिम विदाई के लिए जमा हुए । इसमें पोलिट ब्यूरो के लगभग सभी सदस्य, महासचिव ई. एम. एस, प. बंगाल के मुख्यमन्त्री ज्योति बसु, "पीपुल्स डेमोक्रेसी" के संपादक एम. बसवपुनैया, अखिल भारतीय किसान सभा के अध्यक्ष हरकिशन सिंह सुरजीत, सीटू के महासचिव समर मुखर्जी, सीटू कोषाध्यक्ष ई. बालानंदन, केरल के सचिव वी. एस. अचूतानन्दन, आंध्र प्रदेश के सचिव एल. बी. गंगाधर राव एवं तमिलनाडु सचिव ए. नल्लशिवम शामिल थे । पोलिट ब्यूरो के सदस्यों में सिर्फ नृपेन चक्रवर्ती अस्वस्थ होने की वजह से नहीं पहुंच सके । सी. पी. आइ. (एम) का पूरा सेंट्रल सेक्रेटेरियट—सुनील मोइत्रा, एस. रामचंद्रन पिल्लई, पी. रामचंद्रन, प्रकाश कारत, सीताराम येचुरी—मौजूद थे । प० बंगाल के स्टेट कमेटी के सचिव और लेफ्ट फ्रंट के चेयरमैन शैलेन दासगुप्ता भी थे । सेंट्रल कमेटी के जो लोग उपस्थित थे, उनमें शामिल थे—केरल के मुख्यमन्त्री ई. के नयनार, प० बंगाल भूमि सुधार मन्त्री बिनय कृष्ण चौधरी, केरल एल. डी. एफ. के चेयरमैन एम.एम. लारेंस, टी. के. रामकृष्ण, एम. हनुमंत राव, आर. उमानाथ, के. एन. रविंद्रनाथ, कनक मुखर्जी, सीटू सेक्रेट्री एम. के. पंधे, ऐडवा की महासचिव सुशीला गोपालन, डी. वाइ. एफ. आइ. के अध्यक्ष एम. ए. बेबी, बिमान बसु, जोगेंद्र शर्मा, कर्नाटक के सचिव पी. रामचंद्र राव, उत्तर प्रदेश के रामसुमेर यादव, पंजाब के मंगतराम पासला एवं राजस्थान के सचिव हरिराम चौहान ।

कई अन्य पार्टियों तथा संगठनों के लोग दूर दराज से पहुंचे इनमें शामिल थे—प० बंगाल के क्रीड़ा मंत्री एवं युवा कल्याण मंत्री सुभाष चक्रवर्ती, अखिल भारतीय किसान सभा के महासचिव रामनारायण गोस्वामी, सीटू सेक्रेट्री पी. के. गांगुली, जीवन राय, और रणजीत बसु एस. एफ. आइ. अध्यक्ष ए. विजयराघवन, बृन्दा कारत और एस. बी. भारद्वाज (दिल्ली), दौलत राम

जीवन साथी का० विमल रणदिवे अपनी अंतिम श्रद्धांजली अर्पित करते हुए

(उ० प्र०), म०प्र० के कार्यवाहक स्टेट सेक्रेट्री शैलेंद्र शैली, एस. कुमार, बहादुर सिंह धाकड़ और प्रमोद प्रधान, कर्नाटक से सूर्यनारायण राव, हरियाणा से एस. एन. सोलंकी, प० बंगाल से सरला महेश्वरी, उड़ीसा से अजेय राउत, जनार्दन पति, लम्बोदार नायक, आशीष सेन(बी.इ. एफ. आइ) तथा अन्य।

सी. पी. आइ. (एम) सेंट्रल कमेटी की तरफ से सबसे पहले महासचिव ई. एम. एस. नंबूदिरिपाद ने शव पर फूल रखे। इसके बाद वी. एस. अचूतानंदन एवं शैलेन दासगुप्त ने केरल एवं प० बंगाल स्टेट कमेटी की ओर से, का० बी. टी. आर. को लाल झंडा ओढ़ाया। नेताओं ने विमल रणदिवे और अहिल्या रांगणेकर, दोनों सदस्य—केंद्रीय कमेटी, तथा परिवार के अन्य सदस्यों को सांत्वना दी। महाराष्ट्र सी. पी. आइ. (एम) के स्टेट कमेटी के सचिव एवं सी. सी. एम. प्रभाकर संझगिरि, सी. सी. एम. गोदावरी पारुलेकर, एस. वाई. कोल्हाटकर, पी. बी. रांगणेकर, ए. बी. सावंत, एल.के. वोक, गंगाधर अप्पा बुरांदे, के. एल. मालबड़े एवं पार्टी के अन्य नेताओं एवं जन संगठनों के कार्यकर्ताओं ने अपने प्रिय क्रांतिकारी नेता, जिन्हें जानने का अवसर उन्हें मिला, बी. टी. आर. के पार्थिव शरीर पर फूल मालाएं चढ़ाई।

सी. पी. आइ. राष्ट्रीय काउंसिल और एटक की तरफ से सी. पी. आइ. के सेंट्रल सेक्रेटेरियट सदस्य ए. बी. वर्द्धन ने भी पुष्पांजलि दी। इसके बाद सी. पी. आइ. के माधव राव गायकवाड़, एल. एस. कारखानीस, बी. एस. धूमे, तारा रेड्डी तथा अन्य नेताओं ने भी फूल चढ़ाये।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार, केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्री एम. एस. गुरुपदस्वामी ने शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी और दिवंगत नेता को अपने श्रद्धासुमन प्रस्तुत किए। महाराष्ट्र के राज्यपाल सी. सुब्रमणियम का संदेश भी पहुंचा। जनता दल के राज्य सचिव मृणाल गोरे एवं जनता दल के ही निहाल अहमद, डा० शांति पटेल और जगन्नाथ जाधव ने भी फूल समर्पित किए। अन्य वाम व जनवादी पार्टियों, जैसे—पी. डब्ल्यू. पी, आर. पी. आइ. आर. एस. पी. आदि के नेतागण भी उपस्थित थे। सांस्कृतिक क्षेत्र से उर्दू के मशहूर लेखक अली सरदार जाफरी, प्रख्यात सिने कलाकार ए. के. हंगल एवं अन्य ने आकर अपनी श्रद्धांजलि दी। मजदूर संगठनों, संघों आदि के

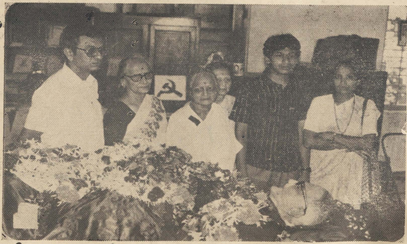

उदय (पुत्र), रोहन (पौत्र) और नीलू (पुत्र-बधू) अपनी अंतिम श्रद्धांजली अर्पित करते हुए

अनगिनत लोग मजदूर वर्ग के महान नेता को श्रद्धांजलि देने पहुंचे ।

और निश्चय ही, आम जनता, जन संगठनों, पार्टी कार्यकर्ताओं की हजारों हजार की भीड़ बम्बई के दूर-दराज इलाकों से अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन के लिए पहुंची । कईयों की आंखों में अपने चहेते नेता के लिए आंसू भर आए ।

**टाइम्स आफ इंडिया** तथा अन्य राष्ट्रीय दैनिकों के अलावा, शिव सेना के मुखपत्र **सामना** समेत बम्बई के हर मराठी दैनिक ने और वास्तव में पूरे राज्य में ही सभी प्रतिष्ठित मराठी दैनिकों ने संपादकीय लिखकर कामरेड बी. टी. आर के निधन पर शोक व्यक्त किया । और उन्हें ऐसा पक्का मार्क्सवादी-लेनिनवादी बताया, जो आखिरी सांस तक अपने सिद्धांतों के प्रति पूरी तरह वफादार रहा। पार्टी की लाइन से इन अखबारों के सारे विचारधारात्मक मतभेदों के बावजूद लगभग सभी अखबारों ने एक पूरी तरह निस्वार्थ तथा समर्पित नेता और देश में कम्युनिस्ट आंदोलन तथा मजदूर आंदोलन के प्रमुख निर्माता के रूप में, कामरेड बी. टी. आर. को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

7 अप्रैल को शाम चार बजे जनशक्ति से विशाल शवयात्रा शुरू हुई । कामरेड बी. टी. आर. का पार्थिव शरीर एक पुष्प-सज्जित ट्रक पर रखा गया, जिसमें पार्टी पोलिट ब्यूरो सदस्य और बी. टी. आर. के परिवारजन बैठे । जुलूस में सबसे आगे डी. वाई. एफ. आइ. तथा एस. एफ. आइ. के 86 युवा लाल वालंटियर थे, जो आधे झुके हुए झंडे उठाये हुए थे । इन वालंटियरों की 86 की संख्या बी. टी. आर के क्रांतिकारी जीवन के 86 वर्षों का प्रतीक था और उनमें से 13 वालंटियर विशेष रूप से बड़े लाल झंडे लिए हुए थे, जो पार्टी की 13 कांग्रेसों का प्रतीक था, जिनके मार्ग-दर्शन में बी. टी. आर. की प्रमुख भूमिका रही थी । इन लाल वालंटियरों के पीछे ट्रक था और उसके पीछे केंद्रीय कमेटी सदस्यों का दल । पार्टी केंद्रीय कमेटी सदस्यों के लिए एक अन्य ट्रक की भी व्यवस्था की गयी थी, लेकिन सभी केंद्रीय कमेटी सदस्यों ने बी.टी.आर. के प्रति श्रद्धा के संकेत के रूप में शवयात्रा में पैदल ही चलने का आग्रह किया । इसके बाद अन्य वामपंथी-जनतांत्रिक तथा धर्मनिरपेक्ष पार्टियों के नेतागण थे और उसके बाद हजारों लोग, जिनमें मजदूर, किसान,

**का० ज्योति बसु का० बी टी आर को पुष्पांजली अर्पित करते हुए। का० अहिल्या, कुसुम और बृन्दा साथ में हैं**

खेतमजदूर, आदिवासी महिला, युवा, छात्र आदि समाज के सभी तबकों और जीवन के सभी क्षेत्रों से जुड़े लोग भारी संख्या में चल रहे थे।

यह विशाल जुलूस पांडुरंग बुधकर मार्ग, एन. एम. जोशी मार्ग, गोखले रोड तथा रानाडे रोड से होते हुए कोई दो घंटे में शिवाजी पार्क शवदाह गृह पहुंचा। रास्ते के दोनों ओर और घरों की बालकनियों पर खड़े सैंकड़ों लोग दिवंगत नेता को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे थे और जगह-जगह लोगों ने फूलमालाएं चढ़ायीं। जुलूस में शामिल लोग विशाल लाल बैनर और कामरेड बी. टी. आर. के चित्र लिए चल रहे थे और कामरेड बी. टी. आर. लाल सलाम, कामरेड बी. टी. आर. अमर रहें, मार्क्सवाद-लेनिनवाद अमर रहे, सी. पी. आइ. (एम) विजयी हो के नारों से आकाश गुंजा रहे थे।

शवदाह गृह में हुई शोक सभा को सी.पी.आइ. (एम) महासचिव ई. एम. एस. नंबूदिरिपाद, सी. पी. आइ. नेता ए. बी. वर्धन, जनता दल नेता मृणाल गोरे, कांग्रेस (आइ) नेता एन. एम. कांबले, पी. डब्लू. पी. नेता विट्ठलराव हांडे, आर. पी. आई. नेता अर्जुन डांगे, कामगार अघाड़ी नेता दादू अत्यालकर, आर. एस. पी. नेता पुष्पा मेहता, डी. एम. के. नेता टी. एम. पोरखो, लाल निशान नेता बी. बापट, एटक नेता जी वी चिटनीस, एच. एम. एस. नेता शांति पटेल, एच. एम. के. पी. नेता शंकर साल्वी, तथा बी. एम. एस. नेता मनोहर ने संबोधित किया। शोक सभा के अंत में प्रभाकर संझगिरि ने कहा कि कामरेड बी. टी. आर. के जीवन और कार्य से प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र में पार्टी तथा मजदूर आंदोलन की ताकत सांप्रदायिकता के उन काले बादलों को छिन्न-भिन्न करने के लिए कोई कसर नहीं उठा रखेगी, जो राज्य पर छा जाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने याद दिलाया कि महाराष्ट्र का मजदूर वर्ग, जो साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और सामंती शोषण के खिलाफ सही सबक सीखने में आगे रहा था, इस लड़ाई में सबसे आगे रहेगा। शोक सभा के बाद बी. टी आर. अमर रहे के आकाशभेदी नारों के बीच का० ई.एम. एस. नंबूदिरिपाद ने चिता को अग्नि दी।

कामरेड बी. टी. आर. अब हमारे बीच नहीं हैं। यह लोकख्यात युग-निर्माता, क्रांतिकारी नेता अपनी जीवन यात्रा पूरी कर चुका है। लेकिन, शोषण अन्याय के खिलाफ अनथक संघर्ष के उनके लम्बे जीवन में, मजदूर वर्ग तथा उसके क्रांतिकारी अगुआ दस्ते की उनकी समझौताहीन वकालत ने, मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा तथा सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद की शुद्धता की रक्षा के उनके अनथक संघर्ष ने लाखों लोगों के दिलों में क्रांतिकारी विचारों की चिंगारियां पैदा की हैं। और एक अनवरत प्रेरणा बनकर दूसरे लाखों लोगों के दिलों में तब तक क्रांतिकारी विचार की चिंगारियां पैदा करता रहेगा, जब तक कि क्रांति और समाजवाद का लक्ष्य भारत में तथा दूसरी जगहों में एक सचाई नहीं बन जाता है। जैसाकि किसी साथी ने शोक पुस्तिका में लिखा: "कामरेड बी. टी. आर ने जहां हमें लाल झंडा सौंपा है, उससे आगे इस झंडे को ले जाने की हम शपथ लेते हैं।"

---

[पृष्ठ 34 का शेष]

को दी जानेवाली राशि 400 रु. करने मातृत्व लाभ दिलाने, सेवाएं नियमित करने तथा पदोन्नति देने आदि मांगें शमिल हैं।

3. अक्टूबर या नवंबर के महीने में एक अखिल भारतीय कान्फ्रेंस आयोजित की जायगी। कान्फ्रेंस के स्थान तथा उसकी तिथियों का अंतिम रूप से फैसला राज्य संगठनों के साथ मशविरा करके किया जायगा। पंजाब तथा केरल के राज्य संगठनों ने, इस कान्फ्रेंस की मेजबानी की पेशकश की है।

बैठक ने, संगठन के संविधान के मसौदे पर विचार किया और कुछ संशोधनों के साथ मसौदा स्वीकार कर लिया गया।

☐ **विमल रणदिवे**

# का० बी. टी. आर. एक महान शिक्षक

□ कनक मुखर्जी

दुनिया के मजदूरो एक हो ! मार्क्स-एंगेल्स का यह नारा, सिर्फ पुरुष मजदूरों के लिए ही महिला श्रमिकों के लिए नहीं—यह कहते हुए 1988 में श्रमिक भवन, कलकत्ता में मजदूरों को सम्बोधित करते हुए पूछा। सत्ता में गणतान्त्रिक महिला समिति के सदस्यों सहित सैकड़ों महिला मजदूर उपस्थित थीं। मार्क्सवादी सिद्धान्तों की प्रभावी व्याख्या सुनने के लिए सभी ट्रेड यूनियनों और जन संगठनों के तमाम कार्यकर्त्ता बहुत शांति से बैठे थे।

कामरेड बी. टी. आर. एक असाधारण, मेधायुक्त मार्क्सवादी थे। उन्होंने हमेशा हमें यह सिखाया कि किस तरह से वर्ग-दृष्टि से आन्दोलनों में महिलाओं की भूमिका की समस्या को सुलझाया जाये और अपनी कतारों को ज्यादा से ज्यादा वर्ग चेतना से लैस किया जाए। वह भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन और पार्टी में निर्माताओं में एक थे। कुल मिलाकर वह एक शीर्षस्थ नेता थे। एक आदर्श साम्यवादी नेता के नाते बी. टी. आर. हमेशा प्रोलितयन अन्तर्राष्ट्रीयतावाद, प्रोलितियन तानाशाही, और विश्व समाजवाद की क्रांतिकारी दृष्टि के ज्वलन्त व्याख्याकार थे। और मूलभूत मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धांतों में किसी भी किस्म के विचलन के सख्त विरोधी थे। 1967 को हुई मार्क्स की पूंजी की शताब्दी के अवसर पर उन्होंने मजदूरों को चेतावनी दी थी, "सावधान रहना, क्योंकि मार्क्सवादी सिद्धांत क्रांतिकारियों को अचूक मार्ग-दर्शन देते हैं, जबकि पूंजीवादी और उनके गुर्गे इसे हमेशा में बेअसर करने की कोशिश में लगे रहेंगे। पिछले सौ वरसों में तमाम सरमायेदारों, प्रवक्ताओं ने इनका भ्रामक प्रचार किया और विद्वानों ने इस सिद्धांत को चुनौतियां दी हैं लेकिन कामगार मजदूरों के आंदोलनों ने व्यवहार रूप में इन तथाकथित विद्वानों को पूंजीवादियों को मुंह-तोड़ जवाब दिया है और आगे बढ़ा है। इस पर आंदोलनों के भीतर ही संशोधन वादी उभरे। उन्नीसवीं सदी में यूरोपीय पूंजीवाद की अपेक्षाकृत शांतिपूर्वक विकास में संशोधनवाद के जनक बर्नस्टेन को जन्म दिया। जिन्होंने घोषणा की कि मार्क्सवादी सिद्धान्त के प्रचलन से बाहर होने की घोषणा की मार्क्स की आर्थिक शिक्षाओं क्रांतिकारी चेतना को चुनौती की, (मार्क्स की शिक्षायें : बी. टी. आर. देखें)

मैंने पहले पहल कामरेड बी. टी. आर. को 1942 में देखा। यह वह समय था जब कम्युनिष्ट पार्टी, पर प्रतिबंध हट चुका था। और हममें से तमाम भूमिगत जीवन जीने वाले नेता बाहर आये थे। उस पार्टी के कामरेड पी. सी. जोशी, जी. अधिकारी और उच्च शीर्षस्थ नेताओं में कामरेड बी. टी. आर भी थे। लेकिन मुझे 1943 के पहले पार्टी कांग्रेस के तीसरे इन्टरनेशनल बम्बई के भंग होने पर उनके प्रस्ताव को सुनने की गहरी ललक थी। क्या गजब की क्रांतिकारी सरगर्मी थे। क्या निश्चय था आज जब वर्षों के बाद भी सहसा मेरे कानों में बी. टी. आर. के शब्द···गूंजने लगते हैं। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल भंग हो गया है लेकिन, पोलित राष्ट्रीयता वाद अमर रहेगा।" ऐसे थे कामरेड बी. टी. आर. जिन्होंने मार्क्सवाद की सच्चाईयों महान क्रांतिकारी उत्साह और दृढ़ता के साथ हमसे उतरा। इसके बाद से ही मैं कामरेड बी. टी. आर. और विमला जी के बहुत करीब हो गयी।

कामरेड बी. टी. आर. और विमल जी को हम कभी भी अलग नहीं देख सके। पार्टी और संगठनों के लिए उनकी शिरकत में हमने उन्हें हमेशा एक जैसी भावना से एक साथ ही समर्पित देखा। दोनों ने साथ सैर सही। एक साथ भूमिगत जीवन की विषमताओं का सामना किया और एक साथ ही पार्टी के लिए बड़े से बड़े त्याग के लिए हमेशा तत्पर रहे। उनका पारिवारिक और सामाजिक जीवन दोनों ही में पीढ़ी के सामने एक मिसाल है। कामरेड बी. टी. आर. ने कभी भी अपने क्रांतिकारी विश्व का सृजन अपने परिवार और सामाजिक जीवन से अलग नहीं किया। इसकी मिसाल पिछली अप्रैल बम्बई में हुई अपार भीड़ है जहां मैं भी मौजूद थी वहां मैंने उनकी बहन कामरेड अहिल्या रांगणेकर का परिवार, उनकी बहन के माता-पिता डा. सवन्त का परिवार उनके भाईयों और बहनों उनके सभी रिश्तेदारों के पूरे परिवार को वहां पूरा

देखा। इसके अलावा तमाम पुराने साथी दोस्त और सहकर्मी जो शोक सन्तप्त थे वहां उपस्थित थे।

हमारी पार्टी और जनसंगठनों ने हमेशा-हमेशा राजनीतिक मार्गदर्शन के लिए कामरेड बी.टी.आर. के शुक्र गुजार रहेंगे। ना सिर्फ ट्रेड यूनियनों बल्कि हमारे सारे जन संगठनों को भी राजनीतिक दिशादर्शन के लिए उनकी आवश्यकता पड़ती थी और वो भी हर तरह की मदद के लिए हमेशा तैयार रहे। उन्होंने "पार्टी और जन संगठन" नामक पुस्तिका भी लिखी जिसमें उन्होंने जन संगठनों के मूलभूत सिद्धान्त बताये।

हमारे महिला संगठन अखिल भारतीय लोकतान्त्रिक महिला संघ (ए. आई. डी. डब्ल्यू. ए.) ने 1981 में अपनी शुरुआत से ही का. बी.टी. आर की बुद्धिमलपूर्ण सलाह पर प्रगति की। ए.आई.डी.डब्ल्यू. ए. के दूसरी सभा के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका में बी. टी. आर ने मार्क्सवाद और महिला आन्दोलन नामक एक लेख में लिखा था—

"अगर महिलाओं को विकासशील लोकतंत्र और वर्गसंघर्ष से पूरा फायदा उठाना है तो महिलाओं का स्वतंत्र आंदोलन का होना निहायत जरूरी है। महिला मामलों पर संघर्ष करने के लिए महिलाओं के बड़े भाग की उदासीनता का विजय पर बहुत जरूरी है। महान उपलब्धियों के लिए, महिलाओं के एक सशक्त और स्वतंत्र आन्दोलन होने और लोकतांत्रिक और मजदूर आंदोलनों से एक जुट होकर उन्हें प्रभावित करने की हमेशा-हमेशा जरूरत है और रहेगी।

(बी. टी. आर.—मार्क्सवादी महिला आंदोलन अखिल भारतीय लोकतांत्रिक महिला संघ की समीक्षा 1986 के अवसर पर)

कामरेड बी.टी.आर. ने हमेशा कामगार महिला मजदूरों पर खास जोर दिया और सीटू को निर्देश दिया कि ट्रेड यूनियनों में महिला मजदूरों का एक अलग से संगठन बनाया जाय और सीटू के तहत एक कामगार महिला समन्वय समिति भी गठित की गई जिसमें कामरेड विमल ने अहम भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने हमें चेताया कि कोई भी महिला आन्दोलन चाहे वह कितना ही विशाल क्यों न हो और ना ही कोई ट्रेड यूनियन आंदोलन तब तक कामयाबी पर नहीं पहुंच सकता जब तक कि सभी कामकाजी महिला मजदूर उसके साथ एक जुट न हों।

एक समर्पित कामगार वर्ग नेता के सपने वे मार्क्सवाद के उत्कृष्ट सिद्धान्तवेत्ता थे। बी.टी.आर. हाल ही में समाजवादी खेमें में हुई उथल-पुथल से बहुत विक्षुब्ध थे। चीन में साम्राज्यवादियों द्वारा मीडिया और आर्थिक दबावों के द्वारा हस्तक्षेप करने और वहां प्रतिक्रांतिकारी संघर्ष फैलाने पर उन्होंने इसके लिए सम्राज्यवादियों का प्रसार विरोध किया था और वहां के मजदूर वर्ग से आह्वान किया था कि वह एकजुट होकर संगठित विरोध करें और इन साम्राज्यवादी कोशिशों को नाकाम करें और समाजवाद की रक्षा करें। समाजवादी खेमे और विश्व की समाजवादी शक्तियों पर आये धक्के और पोलेण्ड, पूर्वी जर्मनी, हंगरी और रूमानिया के बदलावों को वे इन देशों का आंतरिक मामला मानते थे और इन्हें वह समाजवाद पर खतरा मानते थे। सोवियत संघ में हो रहे परिवर्तन पर तो वे विक्षुब्ध थे।

का० बी० टी० आर० ने हमें बार बार ध्यान दिलाया कि समाजवादी देशों में हो रही इन हलचलों के मूल में साम्राज्यवादी शक्तियों का हाथ है और मार्क्सवादी सिद्धांतों को झूठा साबित करने के लिए किस तरह वहां का बुर्जुआ वर्ग भी उनका साथ दे रहा है और जनमत को मार्क्सवाद की सच्चाइयों से भ्रमित कर रहा है हमेशा की तरह बी० टी० आर० ने हमें जोर देकर बताया मार्क्सवादी-लेनिनवादी विषयों भी पर किसी भी आक्रमण या न होने का मतलब से मार्क्सवाद-लेनिनवाद की मान्यताओं उनके विचारों को कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

पिछले वर्ष 1989 को कामरेड मुजफ्फर अहमद की जन्म दिवस पर का० बी० टी० आर० ने लिखा था—

"आजकल तमाम किस्म की झूठी सच्ची सिद्धांत निकल आये हैं।" आजकल तमाम किस्म के झूठी सच्चे विचार धाराये मान्यतायें अपने आंदोलन चला रही है। जो आनी मूल आधार मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचार धाराओं को मानती हैं और हरेक धारा अपने आपको मार्क्स-लेनिन के धारावाहिक कार्यान्वियन के सपने ही पेश कर रही है। एक···हमारी पार्टी बहुत···स्थिति में रहेगी अगर हमारे सभी कासरेड मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारों को पढ़े और किसी भी कोने में होने वाले इससे हर हमले को नाकाम करें तो इस तरह से हम बहुत महान रास्ता खोज निकालेंगें जो अपना समूचा जीवन सामयावाद के

[शेष पृष्ठ 10 पर]

# का० बी. टी. रणदिवे

☐ **गोदावरी पारूलेकर**

का० बी. टी. रणदिवे जैसे ऐतिहासिक योद्धा से संबद्ध अनुभवों, उनकी यादों के बारे में लिखना एक दुष्कर कार्य है।

पुनरपि मैं यहाँ उनसे जुड़े अनुभवों को लिखने का एक विनम्र प्रयास करती हूँ।

मैं जुझारू व्यक्तित्व का० बी. टी. आर. से 4 मार्च 1940 को बंबई में 2 लाख चालीस हजार सूती मजदूरों के मामले पर चल रही हड़ताल के दौरान मिली। मैं हमारी कई सभाओं, जिसमें हम सरकार की नीतियों और तदनुरूप अपनी रणनीति बनाते थे, में से एक में उपस्थित थी। मैंने उनमें मजदूर वर्ग की हितों की रक्षा करनेवाला सबल सिपाही पाया और बाद में वे कृषकवर्ग के हितों के भी पक्षधर के रूप में उभरे।

मैंने पाया कि का० बी. टी. आर. मेरे पति का० शामराव पारूलेकर की तरह हमेशा अतिप्रगतिवादी पोजीशन लेते। उनके जुझारूपन, उनके समर्पण एवं त्याग की भावना जो स्पष्ट वर्ग चेतना पर आधारित होती थी, से काफी प्रभावित थी। हड़ताल के दौरान और बाद में भी हम सबों को कई जेलों में कैद कर रखा गया। का० बी. टी. आर. और कुछ अन्य लोगों को डेबली जेल भेजा गया था।

मैं एक सुधारवादी सामाजिक कार्यकर्ता की तरह बात किया करती। मुझे अभी तक याद है उन्होंने मुझ पर गुस्सा होकर किस तरह डांटा था क्योंकि मुझे लड़ाकू समझे जाने वाली से उन्होंने ऐसी टिप्पणियों की अपेक्षा नहीं की थी। उन्होंने कहा था, "तुमने अभी तक अपनी समाज-सुधार वाली प्रवृत्ति छोड़ी नहीं है।" उसके बाद मैं उनसे बातचीत करने में सावधान रहने लगी।

हम सबों की 1942 में रिहाई हुई। तब कामरेड पारूलेकर ने मुझे खेतिहर मजदूरों और किसानों के बीच काम करने के लिए कहा।

मैंने दक्षिण थाना जिले के चार तालुकों का दौरा किया—जहाँ मध्यम किसानों का दबदबा था, वे बहुसंख्यक थे। मैंने अपनी यात्रा की विस्तृत रिपोर्ट पेश की। कामरेड बी. टी. आर. की फौरी और सही-सही प्रतिक्रिया थी कि कुछ और जिलों का दौरा कर महाराष्ट्र किसान सभा को आकार दिया जाए। अब तक राज्य में कोई किसान सभा नहीं थी—हमने पहली शुरूआत की थी।

पहली महाराष्ट्र किसान सभा थाना जिले में हुई और का० पारूलेकर एवं का० बी. टी. आर. ने उसको संगठित करने के लिए मुझे निर्देशन दिया। वे दोनों 1945 में सम्मेलन के वक्त 45,000 किसानों की रैली देखकर काफी खुश हुए। महाराष्ट्र के सभी जिलों के प्रतिनिधियों ने इस पहले किसान संगठन के सम्मेलन में हिस्सा लिया था। कुछ कांग्रेस और पी. एस. पी. से आए सदस्य भी प्रभावित हुए।

का० बी. टी. आर. का भाषण किसानों को कई दिनों तक याद रहा, चूंकि उन्होंने कर्ण और कुंडल की चर्चा की थी जो किसानों की धार्मिकता को छू गई। सम्मेलन में कुछ आदिवासियों ने हिस्सा लिया था। उनके हाथों में अपना लाल परचम था और संघर्ष की पहल उन्होंने खुद की थी। परिणाम एक विशाल संघर्ष था, जब पांच आदिवासियों को मार गिराया गया। आज आदिवासी किसानों के बीच राजनीतिक कार्य चार जिलों में फैले हैं।

पार्टी के सुधारवादी नेता किसान संघर्ष के फूटने पर विचलित थे, चूंकि उस वक्त राजनीतिक कार्यसूची में स्वतंत्रता का सवाल अहम समझा जा रहा था।

का० बी. टी. आर. ने यह कहकर हमारा उत्साह-वर्द्धन किया कि, "वर्ग-संघर्ष में गोली-हिंसा तो होगी ही।"

का० पारूलेकर और का० बी. टी. आर. ने मुझे उस समय पुर्तगाली कब्जे के अधीन नगरहवेली में अधिकारों की रक्षा की लड़ाई में भी मेरा दिशा-दर्शन किया। कुछ कामरेड नगरहवेली की मुक्ति के लिए शस्त्र प्रयोग पर क्रुध थे पर बिना शस्त्र के कोई मुक्ति संभव नहीं हो पाती। मैंने अपने नेताओं के समर्थन की बदौलत ही आगे बढ़ती रह सकी। नगर-हवेली की जनजातीय जनसंख्या लाल झंडे के प्रभुत्व में आज तक है, चूंकि उनकी मुक्ति इसी झंडे के तले हुई थी।

का० बी. टी. आर ने कुछ महीने महाराष्ट्र में रहकर

महाराष्ट्र की पार्टी, ट्रेड यूनियन और किसानों का दिशा-दर्शन किया।

पर वास्तव में वे केन्द्र के सच्चे सिपाही थे, जिन्होंने पूरे भारत में पार्टी, ट्रेड यूनियन और किसानों का निर्देशन किया।

का० बी. टी. आर. और दिवंगत का० राममूर्ति ने सीटू की शुरूआत की पहल की। आज सीटू की लोकप्रियता, इसके विकास को देखकर अंदाजा होता है कि सुधारवादी ट्रेड यूनियनों से अलग चलने का फैसला कितना उचित था।

पार्टी की रणनीति, लाइन और नीतियों को तय करने में का० बी. टी. आर. की भूमिका सबसे बड़ी रही है। वे पार्टी के मुख्य विचारकों में से एक थे। उनकी यादाश्त एवं लेखन दोनों कुशाग्र थे।

वे हरफनमौला व्यक्तित्व थे। कठिन परिश्रम करते थे एवं सभाओं में वक्त की पाबंदी उनकी आदत थी।

उन्हें क्षुद्र बुर्जुवा और सुधारवादी राजनीति से घृणा थी। उनका कहना था कि इस तरह की मदद करना लोगों को क्रांतिकारी राह से विमुख करना है।

वे पार्टी की सही लाइन न मानने वालों के प्रति वे कठोर थे, यद्यपि साथ-साथ वे उदार भी थे। पार्टी के लिए किसी भी मोर्चे (किसान, ट्रेड यूनियन या अन्य) पर कठिन श्रम करने वालों के लिए उनका दिल नरम था।

वे खुद हमेशा पढ़ने-लिखने या काम करने में व्यस्त रहते थे।

वे एक केन्द्र से दूसरे का दौरा करते थकते नहीं थे। उनके इस गुण ने राजनीतिक स्थिति पर उन्हें अच्छी पकड़ प्रदान की। उनकी दी हुई कार्य योजना ठोस वस्तुगत आधारों पर निर्मित होती थी।

बंबई में 1947 में उनके पड़ाव के दौरान कामरेड पारूलेकर और मैं उनसे नियमित तौर पर, सप्ताह में दो-तीन बार मिला करते।

का० बी. टी. आर. लौह इच्छा और दृढ़ निष्ठा के धनी थे।

बंबई में वे महाराष्ट्र के कार्यों का अध्ययन करते रहते थे। वे पार्टी के लिए कुछ भी सहने को तैयार थे।

बंबई में जब उनकी पत्नी का० विमल परिवार को चलाने के लिए काम करतीं तब मैं उन्हें फटी गंजी में देखती थी। वे इसकी कोई परवाह ही नहीं करते। बाद में रांगणेकर जो हमेशा उनकी मदद करते, ने उन्हें दो गंजिया खरीद दीं।

का० बी. टी. आर. को महिला मोर्चे पर हमारे कार्य की कमजोरी का अनुमान था और उन्होंने इसको शुरू करने में मदद की। इसकी शाखाएं आज लगभग पूरे भारत में हैं।

उन्होंने सीटू, महिला संगठन और किसान संगठनों की मदद की। उन्होंने मुझसे एक बार कहा था कि महिलाओं सहित लाखों लाख किसान राजनीतिक या वर्ग तौर पर सचेत नहीं हैं और जब तक महिला मुक्ति नहीं होती, समाज परिवर्तन की बात सोचना मिथ्या है।

लेकिन कितना दुःखद है कि हम परिवर्तन की बात करने वालों में से कुछ ही लोग खेतिहर महकमों में काम करने के लिए तैयार हैं। अर्द्धचेत या उनींदे किसान समूह को समाजवाद की पट्टी क्या हम लफ्फाजी से पढ़ाएंगे?

स्वतंत्रता आंदोलन से हमें सबक लेना चाहिए। क्या हम किसानों और महिलाओं की भागीदारी के बिना ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी जमीन से खदेड़ सकने में सफल हो पाते।

इसलिए हम सब उन उद्देश्यों की पूर्ति, जिनके लिए हमारे प्रिय नेता का० बी. टी. आर. ने त्याग किया, की शपथ लें कि हम मजदूर वर्ग के साथ साथ किसानों तथा दूसरे शोषितों के साथ भी काम कर एकीकृत होकर अपना लक्ष्य पूरा करेंगे।

इन्कलाब ज़िन्दाबाद !

बी. टी. आर. ज़िन्दाबाद !

[पृष्ठ 8 का शेष]

लिए अर्पित कर देगा।

अभी हाल ही में—पिछली फरवरी 1990 को का० सरोज मुखर्जी की मृत्यु पर उनकी स्मृति पर बी०टी०आर० ने लिखा था—'आज जबकि कई समाजवादी देशों में समाजवाद संकट में है, प्रतिक्रांतिकारी हमले तेज होते जा रहे हैं, कुछ देशों ने पोलिट ब्यूरों की तानाशाही को त्याग दिया है और पूरे बाजार का अर्थ तंत्र को थोपा जा रहा है ऐसे कठिन अवसर पर हमारे कामरेड को इन भीषण लहरों का सामना करने में हिम्मत देगा। ऐसे थे हमारे का० बी० टी० आर० मार्क्स-लेनिनवादी सिद्धांतों में अडिग निर्भीक, क्रांतिकारी उत्साह और सरगर्मी सहित व्यक्तित्व से परिपूर्ण एक सीधे सम्पूर्ण इन्सान।

हमारे महान शिक्षक और प्रिय नेता अब नहीं रहे। लेकिन उनकी क्रांतिकारी उत्साह उनकी महान शिक्षायें मार्क्स-लेनिनवाद की रक्षा ने उसे और भी मजबूत बनाने और भारत में समाजवादी राज्य की स्थापना करने के संघर्ष में हमारा साथ देगी।

# कामरेड बी. टी. रणदिवे

**लक्ष्मी सहगल**

यह 1933 के आखिर की बात है। मेरठ षड्यंत्र का मामला चल रहा था। सभी जाने-पहचाने और संदिग्ध कम्युनिस्टों की पकड़-धकड़ की जा रही थी। श्रीमती सरोजिनी नायडू की सबसे छोटी बहन का० सुभासिनी नाम्बियार जो बाद में जाम्बेकर कहलाई भारत लौटी थीं और उन्हें बम्बई से बाहर निकाल दिया गया था। बम्बई उन दिनों लाल झंडे के नीचे एकजुट हो चुके कपड़ा-मिल मजदूरों का गढ़ था। उसने मद्रास में हमारे घर में शरण ली। हमारी गहरी पारिवारिक मित्रता थी। सादे कपड़ों में लैस पुलिस वाले हमारे घर पर दिन-रात नजर गड़ाए रहते थे और उसे घर से बाहर जाने की इजाजत नहीं थी। जल्द ही पुलिस वाले ढीले पड़ गए और उन्होंने घर के पिछवाड़े में गश्त लगाना बन्द कर दिया। पिछवाड़े में घर का एक छोटा गेट था। जब यह मालूम हुआ तो लोग आंदोलन की खबरें लेकर रात में आने-जाने लगे। मैं उस वक्त 17 वर्ष की थी और कालेज में पढ़ती थी। पर साम्यवाद, महान रूसी क्रांति और अपने देश में कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की कोशिश कर रहे थोड़े किन्तु समर्पित कार्यकर्ताओं के प्रति मेरी बहुत दिलचस्पी थी। जब कामरेड लोग का० सुभासिनी से मिलने आते तो मैं कभी मौजूद नहीं रहती। लेकिन एक बार रात में खुद उसने मुझे बुलाया और कहा कि वह चाहती है कि मैं एक कामरेड से मिलूं, वे जो कहे सुनूं पर उनसे कोई सवाल न करूं। जब मैं कमरे में गई तो मैंने एक सुन्दर ओजस्वी युवक को देखा। वह किसी बात पर बहुत गम्भीर बहस कर रहा। चूंकि वह बहुत धीमें बोल रहा था मैं उसकी कही सभी बातें समझ नहीं सकी। जब वह चला गया तो का० सुभाषिनी ने मुझे बताया कि उसका नाम का० बी. टी. रणदिवे है, वह अत्यन्त समर्पित कामरेडों में से एक है और जिससे वे सब भविष्य में बहुत कुछ करने की आशाएं रखते हैं। दुख की बात है कि अविभक्त पार्टी में व्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता और संशोधनवाद के चलते नेतृत्व के बारे में उनका फैसले पर असर पड़ा और अंततः पार्टी में विभाजन हो गया। लेकिन कामरेड बी. टी. आर. की लाइन अब सही सिद्ध हो चुकी है और यह भी माना जा चुका है कि परिस्थितियों के बारे में उनका मूल्यांकन और फैसला बहुत स्पष्ट था।

उस भेंट के बाद से 1971 तक कामरेड बी.टी.आर. से मेरी भेंट नहीं हुई। इस बीच युगान्तरकारी घटनाएं हुई। द्वितीय विश्व युद्ध, सोवियत शक्ति का अभ्युदय, सफल चीनी क्रांति, चीन के जन गणराज्य की स्थापना और हमारे अपने देश की आजादी। मैं सिंगापुर चली गई थी और वहां सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज में शामिल हो गई थी। 1946 में ही भारत लौट सकी। आजादी के बाद मुझे सिर्फ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने आकर्षित किया। लेकिन आजाद हिन्द फौज से अपने सम्बन्धों के कारण मैं पार्टी के नेताओं से कोई सम्पर्क कायम नहीं कर सकी। वैसे मैं घटनाक्रम को ध्यान से देख रही थी और मैं 1964 में पार्टी के विभाजन और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की स्थापना से पूरी तरह सहमत थी। मुझे 1971 में मौका मिला जब मैं जन राहत समिति की स्वयंसेवक बन कर बंगला देश की लड़ाई के दौरान पश्चिम बंगाल की सीमा में काम कर रही थी। वापसी में मैं कलकत्ता होते हुए आई जहां सी. पी. आई. (एम) के पोलितब्यूरो का सत्र चल रहा था। वहां मैं का० बी. टी. आर. के साथ-साथ का० प्रमोद दास गुप्ता, का० पी. राममूर्ति और का० ज्योति बसु से मिली। काफी देर की बातचीत के बाद मैंने महसूस किया कि वे मुझे पार्टी में शामिल करने के लिए इच्छुक हैं। पार्टी में शामिल होने के बाद मुझे का० बी. टी. आर. से कई बार मिलने और उनसे मार्क्सवाद-लेनिनवाद के उनके व्यापक अध्ययन से सीखने का मौका मिला। कानपुर एक औद्योगिक नगर होने के नाते मजदूर संगठनों की गतिविधियों का केन्द्र रहा है। का० बी.टी.आर. की अगुवाई में 'सीटू' मजदूरों के संघर्षों का नेतृत्व करने लगा। बी.टी.आर. कई दफा कानपुर आए और हम उनसे सलाह-मशविरा करते। मैं विश्वास से कह सकती हूं कि हम का० बी. टी. आर. की दी सही लाइन पर चले और प्रबंधकों के खिलाफ अनेक संघर्ष में जीते। जीत न होने की स्थिति में भी हम सम्मान से पीछे हटे। हमने कभी मजदूरों को धोखा नहीं दिया।

कभी सिद्धांतों की कीमत पर समझौते नहीं किए। सिर्फ तभी जब निर्धारित लाइन से हटा गया गलत समझौते किए गए और मजदूरों का हौसला गिरा। कानपुर प्लेनम के दौरान का० बी. टी. आर. वहां चार दिन रहे। सत्र के दौरान हमें उनकी सलाह पाने का तथा दिन के सत्र कार्यवाही के बाद उनसे अनौपचारिक बातचीत करने का मौका मिला। इस विश्वास की बदौलत ही कि का० बी. टी. आर. हमारे साथ हैं हम 1983 में कानपुर में अखिल भारतीय सीटू सम्मेलन आयोजित कर पाने में सफल हुए। हमने जिम्मेदारियों का बड़ा भारी बीड़ा उठाया था परन्तु का० बी. टी. आर. और अन्य वरिष्ठ नेताओं की सलाह और उनके मार्गदर्शन के बल पर हम अपनी जिम्मेदारी पूरी कर पाने में सफल हुए। सम्मेलन के दौरान का० बी. टी. आर. हमारे निवास में नहीं ठहरे थे क्योंकि वह कामकाज के लिए वहां एक आफिस चाहते थे इस कारण उनके स्वास्थ्य के लिहाज से उनके लिए अलग किस्म का खाना बनाकर उन्हें भेजा जाता था। सम्मेलन समाप्त होने के तुरन्त बाद उन्होंने आयोजन की सफलता के लिए हमें बधाई पत्र भेजा साथ ही खाना बनाने वाली कामरेड को भी बधाई भेजी।

अन्त में मुझे महिला के रूप में मुझे का० बी.टी.आर. को श्रद्धांजलि देनी है। का० बी. टी. आर. महिलाओं पर हो रहे सामाजिक और आर्थिक अत्याचारों से पूरी तरह अवगत थे। उनका मानना था कि जब हमारी वर्ग चेतना जागेगी और जब हम महिलायें वर्ग संघर्ष में भाग लेने के लिए अपने को तैयार कर लेगीं तभी हमारी समस्यायें सुलझ सकती हैं। यह उनके प्रोत्साहन का ही परिणाम था कि सीटू के तहत अखिल भारतीय कामकाजी महिला समन्वय समिति की शुरूआत हो सकी। इस संगठन की बदौलत कामकाजी महिलायें जो सर्वाधिक शोषित तबका है, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए एकजुट हो सकीं। का० बी. टी. आर. सीटू की हरेक बैठक में महिला कार्यकर्ताओं की संख्या तथा समिति के लिए निर्वाचित कार्यकर्ताओं के बारे में पूछताछ करते थे। वह हमारी धीमी प्रगति से काफी दुखी थे। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) का० बी. टी. आर. को उनके दिशानिर्देश के लिए श्रद्धासुमन अर्पित करती है।

का० बी. टी. आर. अब हमारे बीच नहीं हैं परन्तु वह हमारे लिए एक ऐसी विरासत छोड़ गए हैं जो अमूल्य है। सरल और स्पष्ट भाषा में लिखे गए उनके लेख हमारी धरोहर है जो उनके बताये रास्ते पर चलने में हमारी मदद करेगा। यही रास्ता मजदूर वर्ग की विजय और हमारे देश में समाजवाद की स्थापना तक जाता है।

**का० बी. टी. रणदिवे जिंदाबाद**

## 1946 के नौसेना विद्रोह की शहीद का० कमल डोंडे को का० बी. टी. आर. की श्रद्धांजलि

"आज हम लाल झंडा झुका रहे हैं। 22 फरवरी को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की गोलियों ने तुम्हें मार डाला कमल युवावस्था में ही तुम्हें मौत की नींद सोना पड़ा। बंबई में, जिनकी वजह से आज अनेक घरों में दुख और शोक छाया है, जनता के उन्हीं दुश्मनों ने तुम्हारी जान लेली। तुम एक शहीद हो क्योंकि तुम डरकर भागी नहीं। तुम सिपाही की बन्दूक के निशाने पर थी, लेकिन तुम हटी नहीं। तुम भारत की, इस देश की बहादुर बेटी हो। तुम भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की बहादुर बेटी हो। तुम एक लड़ाका पार्टी सदस्य हो और इसीलिए हर कोई तुम्हें प्यार करता है। और, इसीलिए आज तुम्हारी मृत्यु पर हर कोई शोकाकुल है। पार्टी की ओ बहादुर बेटी! मैं पार्टी सेंट्रल कमेटी की ओर से तुम्हें लाल सलाम करता हूं। तुमने स्वतंत्रता संग्राम के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। हम तुम्हें विश्वास दिलाते है कि पार्टी अपना यह संघर्ष निरंतर जारी रखेगी। लाल सलाम।"

22 फरवरी 1946 के बर्बर गोली कांड की निंदा करते हुए का० बी टी आर ने पार्टी के मुखपत्र में रोषपूर्ण संपादकीय लिखा। कमल डोंडे और दूसरे लोग इस गोली कांड में ब्रिटिश सैनिकों की गोलियों का निशाना बन गए थे। उपरोक्त अंश उस शहीद को उनकी आदरपूर्ण श्रद्धांजलि है।

# हम कम्युनिस्ट हैं ! हमें हर हाल में पार्टी के लिए काम करते रहना चाहिए

□ **विमल रणदिवे**

कामरेड बी. टी. आर. अब नहीं हैं। 6 अप्रैल को सुबह तड़के उनका निधन हो गया। मैं, अहिल्या और उदय सारी रात उनके सिरहाने बैठे रहे थे। हम अब भी आशा लगाये थे कि वह बच जाएंगे हालांकि हमें इसका भी ज्यादा से ज्यादा एहसास होता जा रहा था कि ऐसा होना असंभव है।

उनके निधन से पार्टी, सीटू तथा अन्य जनसंगठनों ने अपना 'पिता' खो दिया है। उनके निधन की खबर सुनकर, ज्यादातर कामरेडों के मुंह से यही निकला। उन्होंने मुझसे कहा, "हम अनाथ हो गये।" कामरेड बी. टी. आर. के निधन से, मैंने जीवन साथी और घनिष्ठ कामरेड खो दिया है। उन्होंने मुझे पार्टी के लिए, मजदूर वर्ग के लिए, महिलाओं के उत्थान के लिए और सीटू के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया था। उनके निधन से, पार्टी तथा ट्रेड यूनियनों की जो हानि हुई है, उसकी भरपाई नहीं की जा सकती है।

21 मार्च को जब हम दिल्ली से चले थे, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे उनके बिना वापस लौटना पड़ेगा। वह सिर्फ 15 दिन अस्पताल में थे। शुरू के इलाज से कुछ फायदा भी हुआ, लेकिन कुछ ही दिनों में स्थिति बिगड़ने लगी। हाथों और पीठ में तकलीफ बढ़ती गयी। उन्होंने एक बार भी दवा लेने से इन्कार नहीं किया, हालांकि उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि अंत निकट है और वह इसके लिए तैयार भी थे।

2 अप्रैल को जब का० ई. एम. एस. उनसे मिलने अस्पताल में आये थे, बी. टी. आर. ने बड़ी शांति से उनसे कहा था कि "मैं अब जीना नहीं चाहता। मैं हाथ-पांव से लाचार हो गया हूं और पार्टी के लिए और काम करने की हालत में नहीं रह गया हूं···कृपया पोलित ब्यूरो को यह बता दें।" उन्होंने अंतिम यात्रा के लिए खुद को तैयार कर लिया था। फिर भी, हम उन्हें हालत में सुधार का यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन उन्हें पता था कि हम बस तसल्ली दे रहे हैं। इसलिए, जब वह ई. एम. एस. से यह बात कर रहे थे, मैंने बीच में बोलने की कोशिश की, तो बी. टी. आर. ने कहा, "मुझे टोको मत। मुझे जो कुछ कहना है, कह लेने दो··" उन्होंने ई. एम. एस. से जो कहा था, उससे मैं बहुत असंयत हो उठी और काफी समय तक उनका सामना करने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी। बाद में, बी. टी. आर ने मेरे बारे में पूछा। हमारे पुत्र उदय ने बता दिया कि मैं बहुत दुःखी हूं। उन्होंने मुझे बुलाया और झिड़का, "दुःखी मत होओ। हम कम्युनिस्ट हैं और हमें आखिरी सांस तक अपनी पार्टी के लिए काम करते रहना चाहिए··" लेकिन, मैं उनके सामने खड़ी नहीं रह सकी और बाहर आकर रो पड़ी। मैं डर रही थी कि उन्हें कहीं पता नहीं चल जाय मैं रो रही हूं।

प्रेस रिपोर्टरों ने, उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करते हुए फोन करने शुरू कर दिये। जब हम उनके उत्सुक हवालों के संतोषजनक जवाब नहीं दे सके, तो उन्होंने सीधे 'अस्पताल के स्रोतों से जानकारी लेनी शुरू कर दी। प्रेस रिपोर्टरों आदि के बारे में हमारी आपसी बातचीत बी. टी. आर. को सुनाई पड़ गई। उन्होंने बड़ी शांति से और किंचित मुस्कराते हुए उदय से कहा, "अब वे मेरे लिए श्रद्धांजलि लिख रहे होंगे···उन्हें सच्ची बात बता दो।"

इतने गंभीर रूप से बीमार होने के बावजूद, बी. टी. आर. की विनोदप्रियता ने अंत तक उनका साथ नहीं छोड़ा था। और अंत-अंत तक उनकी स्मरण शक्ति वैसी ही पैनी बनी हुई थी। वह बराबर खबरों से परिचित रहना चाहते थे और मुझसे अखबारों की हेडलाइनें पढ़वाकर सुना करते थे। रात पाली की नर्स पद्मा ने, उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन से एक रोज पहले बी. टी. आर. से कहा था कि वह उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना कर रही थी। बी. टी. आर. ने उससे पूछा कि क्या वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी ? और, हम तब तो आश्चर्यचकित रह गये, जब उन्होंने चर्च में प्रार्थना का पद्म दुहरा दिया। नर्स भी आश्चर्य-

चकित रह गयी और उसने बी. टी. आर. से पूछा, 'अंकल आप कैसे जानते हैं कि यही हमारी प्रार्थना है…" फिर उसने बी. टी. आर. से कहा, "आप मुझे अपना आशीर्वाद दें।" बी. टी. आर. ने जवाब दिया कि वह तो कभी का उसे आशीर्वाद दे चुके हैं।

यह सच है कि ऐसे लोग विरले ही होते हैं, जो मृत्यु का इतने साहस के साथ सामना कर सकते हों, आखिरी क्षण तक इतने तर्कसंगत ढंग से सोच सकते हों। बी. टी. आर. को अच्छी तरह से मालूम था कि वह इस बीमारी से बचेंगे नहीं और वह इस सचाई का सामना करने के लिये तैयार थे।

## एक सादगी भरा जीवन

बंबई में कपड़ा मजदूरों की 1939-40 की, चालीस दिन लंबी हड़ताल के दौरान बी. टी. आर. से मेरा परिचय हुआ था। मुझे तमाम मिल गेटों पर तथा चालों में जाकर, मजदूरों की गतिविधियों की रोजाना की डायरी लिखने की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी। बी.टी.आर. उस समय **गिरनी कामगार यूनियन—लाल बावटा** में काम कर रहे थे। कुछ ही समय बाद हमारी शादी हो गयी। यह 1939 की बात है। उसी रोज बी. टी. आर. को भूमिगत हो जाना पड़ा, क्योंकि दूसरा विश्वयुद्ध छिड़ गया था। बी. टी. आर. का जीवन सादगी की मिसाल है। वह रांगणेकर के घर में एक कमरे में रहते थे और हमारी गिरफ्तारी के बाद, उदय की देखभाल रांगणेकर ने की। 1951-52 के दौरान राजनीतिक मतभेदों के चलते अविभाजित पार्टी में वह ज्यादा काम नहीं कर पा रहे थे, क्योंकि उस समय उन्हें कोई काम सौंपा ही नहीं जा रहा था। उस जमाने में वह, कमरे में अकेले बैठे पढ़ते रहे थे। मुझे, परिवार के भरण-पोषण के लिए काम पर जाना पड़ता था, उस समय वह मेरे और उदय के काम में हाथ बंटाते थे। रांगणेकर परिवार ही था जिसने कठिनाई के दिनों में हमेशा हमारी सहायता की।

**कामरेड बी टी रणदिवे और विमल रणदिवे**

## पार्टी और मजदूर वर्ग के लिए पूर्ण समर्पण

बी. टी. आर. का, निजी तथा सार्वजनिक समूचा ही जीवन पार्टी के लिए समर्पित था। वह कुछ भी करने से पहले, पार्टी के लिहाज से सोचते थे, कभी-कभी तो मुझे भी यह देखकर आश्चर्य होता था कि वह कामरेडों के लिए इतना कुछ कर पाते थे। अपनी शिकायतों या मांगों को लेकर या सलाह मशविरे के ही लिए, कितने सारे कामरेड उनसे मिला करते थे। बी. टी. आर. धैर्य से उनकी बात सुनते थे और उनकी समस्याएं हल करने की कोशिश करते थे। लेकिन अगर कोई कामरेड पार्टी के खिलाफ जाता था, तो वह इसे बर्दाश्त नहीं करते थे।

वह पार्टी, सीटू तथा अन्य जनसंगठनों का पैसा खर्च करने के मामले में बहुत ही सावधान रहते थे। सीटू के साथी भी, सीटू कोष से पैसा खर्च करते हुए डरते थे, क्योंकि सेक्रेटेरियट बैठक में अनुमोदन के बिना पैसा खर्च करने की इजाजत नहीं देते थे। वह इसका खास ख्याल रखते थे कि सीटू की हरेक बैठक में जमा-खर्च का ब्यौरा पेश किया जाय और राज्यों के कामरेडों से बकाया की वसूली की जाय।

बी टी आर को कामरेडों का, और खासकर बढ़ती कीमतों के मौजूदा दौर में, उनकी जरूरतों का, बड़ा खयाल रहता था। लेकिन, वह खुद इसके बारे में बहुत सचेत रहते थे कि पार्टी का एक भी पैसा गैरजरूरी तौर पर खर्च न हो। अभी पिछले ही दिनों पार्टी ने पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं का पार्टी वेतन बढ़ाया था। हमारे लिए भी बढ़ी हुई राशि भेजी गयी थी। मुझे इसके बारे में कुछ पता नहीं था और पूछताछ करने पर ही पता चला। बी टी आर ने मुझसे पूछा कि क्या वाकई हमें अतिरिक्त पैसे की जरूरत है? मेरे मना करने पर उन्होंने, बढ़ा हुआ पैसा पार्टी को लौटा देने के लिए कहा। इतना सादा था उनका जीवन और इतनी कम थी उनकी जरूरतें। पार्टी मुख्यालय के साथियों के बहुत जोर देने पर ही वह, अपने घर पर एक रूम कूलर लगाये जाने की इजाजत देने के लिए तैयार हुए थे, जबकि उनकी उम्र में दिल्ली की गर्मी बर्दाश्त करना कोई आसान काम नहीं था।

कोई बैठक हो या कांफ्रेंस, बी टी आर हमेशा सही समय पर पहुंचते थे। मुझे याद है कि एक बार हमारा एक पड़ोसी सांसद किसी से कह रहा था कि 'ठीक 9 बजे गए हैं, इसका हमें हमेशा पता चल जाता है। 9 बजे ही तो बी टी आर पार्टी कार्यालय के लिए निकलते हैं।" उनका दैनिक कार्यक्रम बड़ा ही व्यस्त होता था। हां, जब वह सफर में होते थे, तब दूसरी बात थी। बहुत से युवा साथी इस पर हैरान रह जाते थे कि कैसे वह 83-85 वर्ष की उम्र में भी कांफ्रेंसों, राज्य कमेटी बैठकों आदि के लिए इतने सारे राज्यों में जा पाते हैं।

स्वास्थ्य के इजाजत न देने के बावजूद, गत दिसम्बर में बी टी आर, पार्टी की पंजाब राज्य कमेटी के सचिव, मरहूम का० रंधावा के बेटे की शादी में शामिल हुए थे, क्योंकि उन्होंने का० रंधावा से वादा किया था कि वह इस विवाह में जरूर शामिल होंगे। का० रंधावा मृत्यु शैया पर थे और बी टी आर ने अपना वादा पूरा किया। मुझे अब भी याद है कि जब वह पंजाब से लौटे, उनकी हालत खराब थी, क्योंकि वह बेतरह थक गए थे। फिर भी वह राज्य कमेटी की बैठक में उपस्थित रहने के लिए उसी रात बंबई चले गए। अब मुझे ऐसा लगता है कि उस समय तक ही, उनकी हड्डियों तक कैंसर का असर पहुंचने लगा था।

बी टी आर, देर गए रात तक और कभी-कभी तो रात दो बजे तक पढ़ते-लिखते रहते थे। अगर **पीपुल्स डेमोक्रेसी, मार्क्सिस्ट** या **वर्किंग क्लास** के लिए कोई लेख लिखना होता था, वह हमेशा निर्धारित समय तक पूरा कर देते थे। बीमारी के गंभीर रूप ले लेने के दौरान मार्च के महीने में उन्होंने, 'काम का अधिकार' पर एक दस्तावेज पुरा किया था। इस पर विवाद था तथा बहसें हुई थीं कि काम के अधिकार की मांग को पश्चिम बंगाल, केरल आदि समेत विभिन्न राज्यों में कैसे लागू किया जाय। हमारे घर पर हुई सीटू सेक्रेटेरियट की दो बैठकों में बी टी आर ने इस सवाल पर रोशनी डाली, विभिन्न नुक्तों को स्पष्ट किया और प्रस्तावित कांफ्रेंस में रखी जानेवाली मांगों को स्पष्ट किया। यह दस्तावेज, देश के ट्रेड यूनियन आंदोलन में बी टी आर का अंतिम महत्वपूर्ण योगदान था। 2-3 अप्रैल को, दुर्गापुर में हुई कांफ्रेंस में इस दस्तावेज पर बहस हुई और उसे स्वीकार कर लिया गया बी टी आर, उस समय अस्पताल में भर्ती होने के कारण इस कांफ्रेंस में शामिल नहीं हो पाए थे।

कभी-कभी मुझे यह देखकर भी आश्चर्य होता था कि कितने सारे लोग, जिनमें पार्टी के बाहर के लोग तथा हमदर्द भी शामिल थे, अपनी पांडुलिपियां आदि सलाह तथा टिप्पणी के लिए बी टी आर के पास भेजते थे। वह हमेशा,

इन्हें पढ़ने के लिए वक्त निकाल लेते थे और अपनी प्रतिक्रिया भेजते थे। कभी-कभी, जब उनके लिए किसी भी प्रकार वक्त निकालना संभव नहीं होता था, वह ये रचनाएं किसी दूसरे योग्य साथी को सौंप देते थे।

ज्ञान की उनकी भूख अतुलनीय थी। अभी पिछले ही दिनों मार्क्सिस्ट में जवाहरलाल नेहरू पर उन्होंने जो लेख लिखा था, उसके लिए अध्ययन करने तथा सामग्री तैयार करने में उन्हें कई रोज लगे थे। उन्होंने लाइब्रेरी से किताबें मंगाने में कामरेड साहा की सहायता ली थी। उन्होंने ढेर सारे नोट्स लिए थे और अंततः एक लंबा लेख लिखा। इस बीच उन्हें बराबर इसकी चिन्ता रही कि लेख समय से पूरा हो जाय।

बीमारी के ही दौरान, इसी जनवरी में जब बी टी आर बंबई अस्पताल में थे, उन्होंने अस्पताल में ही टाइपराइटर मंगाया था और अस्पताल से ही पार्टी के लिए कुछ सामग्री तैयार कराकर भेजी थी। आसपास के लोग हैरान थे कि बगलवाले कमरे में कोई मरीज रह रहा है या कोई दफ्तर है।

इस तरह, इसी अवधि में उन्होंने 'अंतर्राष्ट्रीय स्थिति' पर एक दस्तावेज तैयार किया, जो उनका आखिरी दस्तावेज था। बी टी आर जब टाटा अस्पताल में भर्ती थे, वह पूर्वी यूरोप की घटनाओं के बारे में सोचते रहते थे और इसे लेकर चिन्तित रहते थे। नींद में भी वह अंतर्राष्ट्रीय स्थिति, पार्टी या मार्क्सवाद पर कई बार असंबद्ध वाक्यांश बुदबुदाया करते थे और यह सोचकर बहुत दुःखी हो जाते थे कि वह कुछ भी नहीं कर पा रहे हैं। अस्पताल में मिलने आनेवाले अनेक कामरेडों से वह, वर्तमान अंतरराष्ट्रीय स्थिति पर चर्चा किया करते थे। इस समय, जब कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांतों का परित्याग किया जा रहा है, जब कम्युनिस्ट पार्टियों को भंग किया जा रहा है, उनकी चिन्ता साफ तौर पर देखी जा सकती थी।

बी टी आर, अपनी कही बात से कभी डिगते नहीं थे या उससे इनकार नहीं करते थे। 1962 के भारत-चीन सीमा टकराव के समय, अंतर्राष्ट्रीय हालात पर उनके विचार इसके मिसाल थे। उन्होंने स्थानीय दैनिकों को अपनी राय से अवगत करा दिया था और कहा था कि चीन ने कोई हमला नहीं किया है और भारत-चीन विवाद को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाया जाना चाहिए। यह उस जमाने की बात है, जब इस मुद्दे पर जनमत हमारी पार्टी के खिलाफ था और हमारे लोगों की गिरफ्तारियां हो रही थीं। स्थानीय अखबारों ने बी टी आर के विचार छाप दिये। इस पर बड़ा हंगामा हुआ और संबंधित दैनिक को लगा कि बी टी आर इस खबर का खंडन कर देंगे। लेकिन, वह अपनी बात पर कायम रहे और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया तथा 1966 में ही कहीं जाकर जेल से छोड़ा गया।

बी टी आर पिछले काफी अर्से से, पार्टी के काम में बढ़ती संसदवादी प्रवृत्ति को लेकर भी बहुत चिन्तित थे। वह खफा थे कि पिछले संसदीय चुनावों के दौरान त्रिपुरा में हुए हमलों का कोई खास जिक्र नहीं हुआ, जबकि अमेठी में धांधली पर इतना हंगामा हुआ।

वह हमेशा, पार्टी या ट्रेड यूनियनों के कामकाज की आलोचना का स्वागत किया करते थे। वह जब किसी लेख या लेखन को पार्टी की लाइन से भटकता हुआ पाते थे, तीखी आलोचना करते थे। वह, पार्टी कार्यकर्ताओं को भटकने से बचाने की हर मुमकीन कोशिश करते थे। वह, पार्टी में अनुशासन के हामी थे और जनांदोलनों व जनसंगठनों में जनतांत्रिक तौर तरीकों पर विशेष जोर देते थे, जिनका हमेशा ध्यान नहीं रखा जाता है। वह लगातार सीटू तथा ट्रेड यूनियनों में सक्रिय पार्टी कामरेडों का आह्वान करते थे कि वर्ग संघर्ष तथा पार्टी की लाइन पर कायम रहें।

वह, मजदूर वर्ग के पुराने कार्यकर्ताओं को जिस कदर प्यार करते थे, वह हमेशा याद रहेगा। स्वाभाविक रूप से, ऐसे अनेक कामरेड अस्पताल में उनके पलंग के पास रोते देखे गए। जो लोग पार्टी को प्यार करते हैं, उन्हें बी टी आर बहुत प्यार करते थे और उनके लिए कुछ भी करने के लिए तैयार रहते थे लेकिन, पार्टी की लाइन से किसी भी तरह का भटकाव उन्हें बर्दाश्त नहीं था। जब बी टी आर मरणांतक बीमारी से घिरकर अस्पताल में भर्ती थे, अचानक उन्होंने कामरेड सुशीला गोपालन के स्वास्थ्य के बारे में जानना चाहा। सभी जानते हैं कि बी टी आर, ए के जी को कितना प्यार करते थे।

प्रार्थना समाजियों के परिवार में जन्मे बी टी आर, हमेशा से प्रगतिशील तथा आधुनिक विचारों के हामी थे। वह, पोंगापंथी विचारों तथा नजरिए से घृणा करते थे और सभाओं में उनके खिलाफ खुलकर बोलते थे। वह ऐसे वरिष्ठ साथियों की भी आलोचना करने से नहीं

चूकते थे, जो पिता की मृत्यु पर सिर घुटाने या जनेऊ पहनने जैसी गयी बीती प्रथाओं से चिपके हुए थे। बहरहाल, इस मामले में वह आम कार्यकर्ताओं और पार्टी नेताओं के बीच जरूर अंतर करते थे।

## सीटू और कामरेड बी टी आर

कामरेड बी टी आर के मार्ग-दर्शन के चलते सीटू को वह हैसियत हासिल हुई है, जो उसे आज मिली हुई है। उनके अनथक मार्ग-दर्शन, वर्ग संघर्ष की सही लाइन, मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की कार्यनीति, आदि के ही चलते सीटू आज देश की सर्वप्रमुख ट्रेड यूनियन बन सकी है। और, सीटू ने ही नहीं बी टी आर के मार्ग-दर्शन में फेडरेशनों ने भी, मजदूर आंदोलन पर अपनी छाप छोड़ी है। यह समझ पाना मुश्किल है कि कैसे वह सीटू के अलावा दूसरी अनेक फेडरेशनों तथा यूनियनों के मार्ग-दर्शन के लिए भी समय निकाल पाते थे। वह, यूनियनों की जटिल से जटिल समस्याओं को निपटाया करते थे। समस्या जितनी ही ज्यादा कठिन तथा जटिल होती थी, चुनौती के तौर पर उसे हल करने में उनकी दिलचस्पी उतनी ही ज्यादा रहती थी। अपने जबर्दस्त प्रभाव तथा सस्याओं की गहरी समझ के चलते वह, सम्बंध लोगों के लिए संतोषजनक समाधान निकाल पाते थे।

## महिला प्रश्न पर

बी टी आर, महिलाओं के हितों की रक्षक थे। जिन महिला कामरेडों को कांफ्रेंसों, कन्वेंशनों, बैठकों आदि में बी टी आर को सुनने का सौभाग्य मिला है, उन्हें मालूम होगा कि किस प्रकार वह अपने परिवारों की महिलाओं और आम तौर पर महिलाओं को गोलबंद न करने के लिए पार्टी कामरेडों तथा नेताओं को झिड़का करते थे और उनसे महिलाओं को गोलबंद करने की अपीलें किया करते थे। उन्हें बराबर यह शिकायत रहती थी कि पार्टी तथा सीटू द्वारा, महिलाओं की राजनीतिक शिक्षा पर तथा उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक बनाने पर, समुचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वह, महिलाओं के प्रति पार्टी तथा ट्रेड यूनियनों में कायम सामंती रवैये पर फट पड़ते थे। वह किसी भी राज्य में, किसी भी कांफ्रेंस में क्यों न बोल रहे हों, वह यह जरूर पूछते थे कि इतनी कम महिलाएं क्यों आयी हैं ? अक्सर नेतागण मेरे पास आकर शर्मिंदगी से कहते थे : 'हमने, महिलाओं को लाने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश की है। हमें, बी टी आर की नुक्ताचीनी से डर लगता है ·· ।' प० बंगाल तथा केरल जैसे, आंदोलन के लिहाज से आगे बढ़े हुए राज्यों में भी वह, महिलाओं के प्रश्नों के प्रति साथियों की सुस्ती का सवाल उठाते थे। वह, अचानक नेताओं से पूछ बैठते थे, 'कांफ्रेंस में कोई महिला क्यों नहीं है ?' और, कोई भी कारण उन्हें पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पाता था।

महिलाओं की और ट्रेड यूनियनों में कामगार महिलाओं की भूमिका की इस राजनीतिक समझदारी के फलस्वरूप ही, सीटू के झंडे तले महिला शाखा का गठन हुआ। इससे फेडरेशनों में, एल आई सी, बैंक आदि यूनियनों में कामगार महिलाओं को बड़ी राहत मिली और यूनियनों द्वारा उनकी विशेष समस्याएं उठाए जाने का द्वार खुला। बी टी आर के अनवरत प्रयासों तथा मार्ग-दर्शन के फलस्वरूप ही कामगार महिलाओं की अखिल भारतीय समन्वय समिति का गठन हुआ। बी टी आर ने, मुझसे यह जिम्मेदारी संभालने के लिए कहा। 1978-79 में **वायस आफ वकिंग वोमेन** के नाम से इस संगठन की पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। और बी टी आर के ही आग्रह पर, 'कामकाजी महिला' के नाम से हिन्दीभाषी क्षेत्र के लिए पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया।

कामगार महिलाओं को ट्रेड यूनियन में संगठित करने की उन्हें बड़ी चिन्ता थी। वह, अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति के काम में भी मदद किया करते थे। अनेक मौकों पर, विभिन्न मुद्दें पर हमें उनका मार्ग-दर्शन मिला था।

बी टी आर, वैज्ञानिक रूख पर पक्का विश्वास रखते थे। अगर डाक्टर उनकी बीमारी का कोई तर्कसंगत कारण न बता पाता, तो वह संतुष्ट नहीं होते थे। कई बार पुत्र वधू नीलू से, जो एक डाक्टर है, वह अपनी बीमारी के बारे में पूछताछ करते थे। हमारा पुत्र, जो आखिरी दिनों में लगातार उनके पास ही रहा, उन्हें ढाढ़स बंधाता। वह अक्सर उदय के बारे में पूछते थे कि वह है या नहीं। वह, उदय को उसके बचपन की अनेक घटनाएं याद दिलाते थे और हंसाते थे। वास्तव में, उनके बीच दोस्ती-सी हो गई थी और बी टी आर ने उसे अपने पिछले जीवन के बारे में, अपनी जेल यात्राओं के बारे में और जेल में किए

**[शेष पृष्ठ 21 पर]**

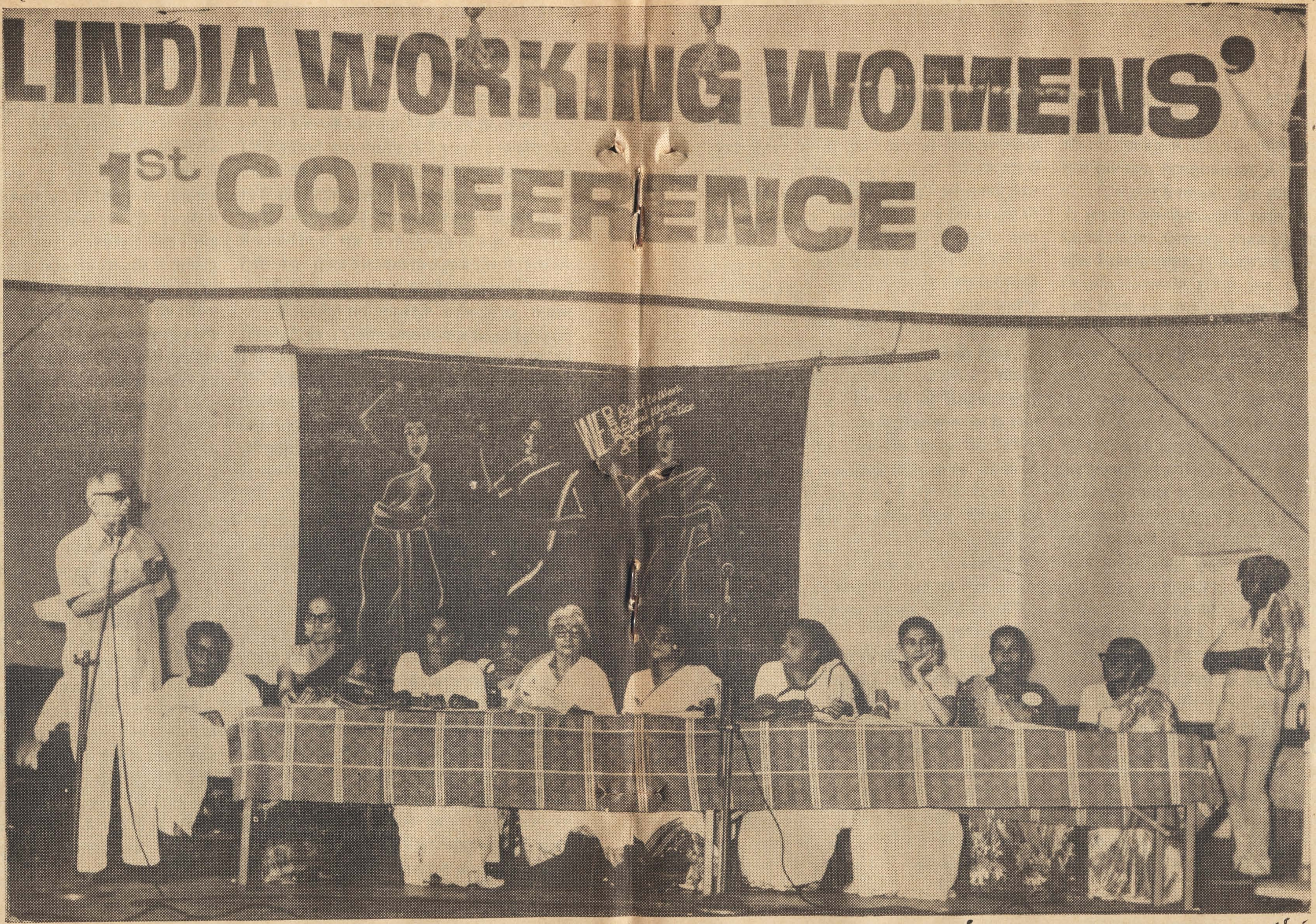


का० बी.टी.आर मद्रास में 9 से 10 अप्रैल 1979 को महिला कामगारों के पहले कन्वेंशन को संबोधित करते हुए

# कामरेड बी टी आर

□ अहिल्या रांगणेकर

यकीन नहीं आता कि मेरे भाई बाबू (कामरेड बी टी आर) अब नहीं हैं। वह तो चले गये, लेकिन आदर्शवाद, संघर्ष की भावना, त्याग और पार्टी, मजदूर वर्ग तथा देश के लिए प्रेम का जो समृद्ध खजाना वह अपने पीछे छोड़ गये हैं, वह कभी खत्म नहीं होनेवाला है।

अपने स्कूली जीवन से ही, उनके कुछ सिद्धांत रहे थे। हमारे पिता, एक समाज सुधारवादी, प्रार्थना समाजी थे। इसलिए, बीस के दशक से ही अछूत जातियों के लोग हमारे घर में आया करते थे और परिवार के लोगों को पानी आदि देने जैसे काम किया करते थे। इसके लिए हमारे परिवार को समाज से बहिष्कृत भी किया गया था। उस समय तक मेरा तो जन्म भी नहीं हुआ था, लेकिन अपने दूसरे बहन-भाइयों से मुझे पता चला कि इस सबकी बी टी आर पर क्या प्रतिक्रिया हुई थी। अपने स्कूल में अनुसूचित जाति के छात्रों से उनकी दोस्ती हो गयी थी और एक मेधावी छात्र होने के नाते वह पढ़ाई-लिखाई में उनकी मदद किया करते थे। रिश्तेदारों से भेंटस्वरूप उन्हें जो भी पैसा मिलता था, वह स्कूल के तीन लड़कों की मदद करने में खर्च करते थे। इसके लिए, हाईस्कूल के कुछ छात्रों ने एक बार उन पर हमला भी किया था लेकिन, बी टी आर ने इसका ऐसा जवाब दिया कि फिर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि उन्हें हाथ लगाये।

वह हमेशा चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। जब बी टी स्कूल में थे, किसी ने उन्हें यह चुनौती दे दी कि तुम सिर्फ किताबें पढ़ सकते हो, लेकिन क्रिकेट या कोई दूसरा खेल खेलने की तुममें हिम्मत नहीं है। बी टी ने चुनौती स्वीकार कर ली और इतनी अच्छी तरह क्रिकेट खेलकर दिखायी कि उन्हें पुणे के एन एम विद्यालय की क्रिकेट टीम में ले लिया गया।

1923 में 'विधवा विवाह' पर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें हिस्सा लेने के लिए कालेज के छात्रों को बुलाया गया था। भाषण-प्रतियोगिता में तत्ववादी यह तर्क दे रहे थे कि विधवा विवाह, धर्म और मनुस्मृति के खिलाफ है। बी टी आर ने बोलने की इजाजत मांगी और सात मिनट तक बोले। उन्होंने वक्ताओं से अपनी माताओं का सम्मान करना सीखने का आग्रह किया और कहा कि फर्म क्या है, ईश्वर के नाम पर पैसा लूटना। उन्होंने संस्कृत का श्लोक उद्धृत करके बताया कि किस प्रकार महिलाओं को देवी मानने की परंपरा रही है। उनके भाषण के फौरन बाद, दो वक्ता प्रतियोगिता छोड़कर चले गये।

उनके जीवन से ऐसी अनगिनत मिसालें दी जा सकती हैं, जो दिखाती हैं कि किस प्रकार अपने स्कूली तथा कालेज के छात्र जीवन में भी बी टी आर कुछ सिद्धांतों के लिए लड़ते रहे थे।

हमारे मौसेरे भाई बाबासाहेब समर्थ, डॉ० आंबेडकर से घनिष्ट रूप से जुड़े हुए थे और उनसे निरन्तर संपर्क रखते थे। हमारे एक और मौसेरे भाई, डॉ० अधिकारी द्वारा दी गयी मार्क्सवादी पुस्तकों ने बी टी आर को मार्क्सवाद की ओर झुकाया और अपनी शिक्षा समाप्त करने के फौरन बाद वह कम्युनिस्ट आंदोलन में शामिल हो गये।

1928 और तीस के दशक तक, "उठ जाग ओ भूखे बंदी" आदि, अंग्रेजी क्रांतिकारी गीतों का प्रचलन था। बी टी आर ने एक मराठी गीत लिखा था : "क्रांति का परचम उठाओ।" एक जमाने में, सभाओं को संबोधित करने से पहले यह गीत गाया जाता था।

1930 में एक जोशीले भाषण के बाद उन्हें जेल में डाल दिया गया।

1934 में हमारे पिता की मृत्यु हो गयी। हम दाह-संस्कार के लिए बी टी के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन, उस समय कपड़ा मजदूरों की हड़ताल चल रही थी, जिसके कारण बी टी नहीं आ सके। बाद में जब वह मां से मिले, उन्होंने शिकायत की, "तुममें कोई इंसानियत नहीं है। तुम मुझे सांत्वना देने नहीं आये।" बी टी ने मां से जवाब पूछा : "मां, वहां हजारों लोग, उनके बीवी-बच्चे खाने के लिए संघर्ष कर रहे थे और उनके बच्चे भूख से बिलख रहे थे। ऐसे में, तुम और पिताजी मुझसे क्या करने के लिए कहते ? मैं जानता हूँ मेरे पिताजी की

'विरासत' इंसानियत की थी और इसी पर मैं चला हूं। क्या तुम अब भी मुझसे नाराज हो।" मां सेजवाब में कुछ भी कहते नहीं बना।

इसके बाद मेरे सारे भाई-बहन यंग कम्युनिस्ट लीग में आ गये। बी टी जो भी काम करते थे, जो भी कदम उठाते थे, उसमें एक सिद्धांतनिष्ठ रुख होता था और इसने हम सबको प्रभावित किया।

हमारे पार्टी जीवन के दौरान भी वह बड़े सख्त अनुशासन की मांग करते थे। 1948 में जब हम सब जेल में थे, मजदूर वर्ग को वही सुविधाएं नहीं दी जाती थीं, जो दूसरी श्रेणी के कैदियों को दी जाती थीं। हमें इसके खिलाफ संघर्ष करना पड़ा था। पचास के दशक में जब हमें साधारण पार्टी सदस्य बनाया गया तथा उसके बाद भी, वह हमसे जैसे कड़े अनुशासन की मांग करते थे। उसे हमें भूल नहीं सकते हैं।

इसी तरह, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन के दौरान और गोआ मुक्ति आंदोलन के दौरान के उनके भाषण अविस्मरीय हैं।

1963 में जब हम जेल में थे, मां का निधन हुआ। मुझे, माँ की मृत्यु से सिर्फ पांच मिनट पहले पुलिस के पहरे में मां के पास लाया गया था और बी टी को मां की मृत्यु के बाद ही लाया गया। इस पर मैं अधिकारियों पर बिगड़ पड़ी। बी टी ने मुझे एक तरफ ले जाकर कहा कि सरकार ठीक इसी तरह पेश आयेगी और हमें बहुत से धक्कों के लिए तैयार रहना चाहिए।

उनके लिए पार्टी ही जैसे पूरा जीवन थी। अपने आखिरी दिनों में जब वह अस्पताल में थे, बी आर ने कहा था: "मैं अब और नहीं जीना चाहता, क्योंकि मैं अब पार्टी का कोई काम नहीं कर पा रहा हूं।" उन्होंने यह भी कहा था: "कृपया पोलिट ब्यूरो को सूचित कर दो कि मुझे दयालुतापूर्वक मृत्यु दिलायी जाय।" वह, बराबर युवा कार्यकर्ताओं की बात करते थे और कहते थे कि वे पार्टी का नेतृत्व कर सकते हैं। उन्हें अगर कोई चिंता थी, तो पार्टी की, और यह हम भी कभी भूल नहीं सकते हैं। महिला कार्यकर्ताओं की भूमिका के प्रति उनके रुख का भी आंदोलन में महिलाओं के स्थान को पहचाने जाने में खासा योगदान रहा है।

मैं, उनकी स्मृतियों को कागज पर उतारने बैठूं, तो यह लेख शायद कभी खत्म ही न हो।

मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय हालात के प्रति उनका रुख आलोचनात्मक था और वह कहा करते थे कि "मार्क्सवाद-लेनिनवाद कभी खत्म नहीं होगा। उससे भटकाव तो आ सकते हैं, लेकिन मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धांतों को आधार बनाकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। "अस्पताल में, उनसे मिलने आनेवाले बहुत से लोग अंतर्राष्ट्रीय हालात के बारे में पूछते थे और बी टी आर यह जरूर कहते थे कि कम्युनिज्म कभी खत्म होने वाला नहीं है।

हम शपथ लेते हैं कि उन्होंने जिन सिद्धांतों के लिए संघर्ष किया और सी पी आइ (एम) को जो गहन विश्वास अर्पित किया, उसे आगे बढ़ायेंगे।

---

[पृष्ठ 17 का शेष]

जानेवाले व्यवहार के बारे में, काफी कुछ बताया भी था।

ऐसे समर्पित पार्टी नेता, ऐसे सिद्धंतनिष्ठ तथा आत्मत्यागी व्यक्ति विरले ही होते हैं। उनके निधन से पार्टी को तथा मजदूर वर्ग को भारी धक्का लगा है और पार्टी में एक शून्य पैदा हो गया है।

बी टी आर, उन कामरेडों से प्यार करते थे, जो मार्क्सवाद-लेनिनवाद का अध्ययन करते हैं और लेनिन की पार्टी के बुनियादी सिद्धांतों पर कायमर रहते हैं। वह हमेशा, मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शुद्धता की रक्षा करते थे। लेकिन, आज उन्हीं सिद्धांतों को चुनौती दी जा रही है और अपने अंतिम दिनों में बी टी आर बहुत चिंतित थे। आइये! हम उनके आदर्शों की पार्टी का निर्माण करें और लाल झंडे को बुलन्द रखें, जिसके लिए बी टी आर लड़ते रहे थे और जिसके लिए उन्होंने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया।

---

पढ़ें

## कामकाजी महिला

(हिन्दी द्विमासिक पत्रिका)

कीमत : एक प्रति : 1 रुपया
वार्षिक चन्दा : 6 रुपये

**अपनी प्रतियों के लिए हमें लिखें :**

सी ग्राई टी यू 6, ताल कटोरा रोड
नई दिल्ली-110001

# का. बी. टी. आर. की यादें

☐ बृन्दा करात

क्रांतिकारी आंदोलन पर लिखनेवाले और भविष्य के इतिहासकार इस देश के कम्युनिस्ट नेताओं में कामरेड बी टी आर को अग्रिम पंक्ति में रखेंगे। स्पष्ट तौर पर क्रांतिकारी आंदोलन में उनके योगदान पर—सैद्धांतिक विश्लेषण, समझ और व्यावहारिक या सांगठनिक दोनों पक्षों में—मैं यहां नहीं लिखूंगी। लेकिन बी टी आर एक ऐसे नेता थे जो पार्टी या जनसंगठनों के आम कार्यकर्ताओं से हरसंभव संपर्क बनाए रखने पर विशेष ध्यान देते थे और इसलिए पूरे देश में हजारों करोड़ों के पास बी टी आर के साथ संपर्क की अनगिनत व्यक्तिगत यादें हैं। मैं कुछ इन्हीं यादों के बारे में लिखूंगी।

हम दिल्ली में काम करने वालों का सौभाग्य था कि कामरेड बी टी आर तक हमारी आसान पहुंच थी। हालांकि उन पर हमेशा काम और जिम्मेदारी का गुरुतर बोझ होता, पर ऐसा एक भी अवसर नहीं हुआ जब वे इतने व्यस्त हों कि हमसे हमारी समस्याओं पर बात न कर सकें। हम उनके सुझाव एवं निदान के लिए प्रायः उनसे मिलते थे। वे अपनी डेस्क के पीछे, पत्र-पत्रिकाओं अखबारों और किताबों की स्वच्छ सी ढेरे के बीच प्रायः अपने डेस्क लैंप के प्रकाश में लिखते हुए मिला करते। जब हम आते तो अपनी बत्ती बुझाकर हमारी समस्या के बारे में पूछते। ताज्जुब है कि उनको पिछली बहस की बातें एकटिक की तरह साफ-साफ याद रहतीं। हमारा आना निश्चय ही व्यवधान उपस्थित करना होगा, पर उन्होंने कभी भी धैर्यहीनता नहीं दिखाई, न ही यह प्रकट होने दिया कि बात इतनी मामूली है कि उस पर उनसे बात नहीं की जानी चाहिए। बी टी आर में यह विलक्षण गुण था कि किसी भी क्षेत्र—महिला, मजदूर, छात्र, बुद्धिजीवी से संबद्ध आंदोलन की समस्याओं को सुनने अपने विचार देने की तत्परता दिखाकर वे कामरेडों में अदम्य विश्वास का सृजन करते थे। बेशक वे कटु आलोचक बन जाते जब उनकी समझ से सिद्धांतों की धरातल पर कोई समझौता होता दीखता हो। मुझे कई वर्षों पहले का एक वाक्या याद आ रहा है। मैं तब एक सूती उद्योग में कार्यरत थी और सभी ट्रेड यूनियनों की संयुक्त समिति के आह्वान पर हड़ताल चल रही थी। हमने बी टी आर से हड़ताली मजदूरों की संयुक्त रैली को संबोधित करने का आग्रह किया था। अचानक बारिश शुरू हो गई पर मजदूर एक के बाद एक सारे वक्ताओं के धैर्यपूर्वक सुनते रहे। मुझे का० बी टी आर को बचाने के लिए छाते ढूंढने की चिन्ता ज्यादा थी। जब वे बोलकर हमारे साथ वापस जा रहे थे तो मैंने उनसे असुविधा के लिए क्षमा याचना की। उन्होंने मेरी ओर देखकर तीखे अंदाज में कहा, "मुझे वर्षा की असुविधा की चिन्ता नहीं है बल्कि मैं सीटू यूनियन की लाइन की बात सोच रहा हूं। दूसरे यूनियन नेताओं के भाषणों से स्पष्ट है कि वे संघर्ष के समझौते की ताक में हैं पर तुम्हारे वक्ताओं ने उनकी मुखालिफत नहीं की।" उन्होंने कहा, "यह तो संयुक्त मोर्चा रणनीति का माखौल है और पुछल्लावाद के अलावा कुछ भी नहीं;" ऐसा ही हुआ एक या दो सप्ताह बाद लंबी हड़ताल से परेशान मजदूरों की स्थिति का फायदा उठाकर दूसरे यूनियनों ने कार्यबोझ स्वीकार कर एक गंदा समझौता कर लिया। हम बी टी आर से पूछने गए कि क्या करें। एक बार डॉट सुनने के बाद मुझे उनके पास जाने में भय हो रहा था। लेकिन उस दिन मुझे दूसरी सीख मिली कि बी टी आर नौजवान साथियों के साथ कैसा बर्ताव करते हैं। हमें पस्त हिम्मत देखकर उन्होंने हमें झिड़का नहीं बल्कि धीरतापूर्वक यह समझाया कि हमने गलती की है। हमें सलाह दी कि समझौते पर हस्ताक्षर मत करो और स्वतंत्र अभियान के जरिए मजदूरों से नजदीकी रिश्ता कायम करो। साथ ही, यदि सही लाइन पर कोई संघर्ष लड़ा गया हो तो बी टी आर ध्यान देकर इसकी प्रशंसा करते थे। दिल्ली की सात दिवसीय औद्योगिक हड़ताल के बाद कामरेड बी टी आर ने एक रिपोर्ट के साथ हमें बुलाया और हमें बधाईयां दीं। मुझे याद है हम कितने खुश थे क्योंकि बी टी आर से प्रशंसा के शब्द हमारे लिए सम्मान के प्रतीक थे।

सर्वविदित है कि बी टी आर ट्रेड यूनियनों में महिला कार्यकर्ताओं को विकसित करने में खास रूचि रखते थे। कुछ ट्रेड यूनियन नेताओं की सामंती प्रवृतियों की आलोचना में वे क्रूर थे। वे एड्वा के विकास के प्रति भी

चिंतित थे। मुस्लिम महिला विधेयक के वक्त वे मुस्लिम महिलाओं से हमें मिली प्रतिक्रियाओं को जानने के लिए अतीव उत्सुक थे और वे निराश हो गए जब उन्हें पता चला कि अधिवेशन में उनके भाषणों या टिप्पणियों को रिकार्ड नहीं किया गया, चूंकि इस आधार पर एक पुस्तिका निकलवाना चाहते थे। आंदोलन में अल्पसंख्यकों एवं अनुसूचित जाति की महिलाओं को लाने की असफलता से उबरने की जरूरत पर बार-बार बल देते थे।

बी टी आर ने दृढ़तापूर्वक यह मत रखा कि पार्टी को महिला आंदोलन की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। अकेले व्यक्ति थे जिन्होंने पिछले पार्टी कांग्रेस में भी यह बात रखी। महिला अधिकारों की उनकी इसी अचानक वकालत की वजह से ही शायद महिला कार्यकर्ताएं उनके बिना, अनाथ होने कासा अनुभव कर रही हैं। कामरेड बी टी आर की अंतिम यात्रा में जब मैं कामरेड सुशीला गोपालन से मिली तो आंसुओं के बीच एक वाक्य जो उन्होंने उचारा वह यह था, "हमने उस कामरेड को खो दिया है, जिसे हमारे आंदोलन की वास्तविक चिन्ता रहती थी।" हममें से कई ऐसा ही सोचती हैं क्योंकि बेशक कई अन्य नेताओं एवं साथियों ने आंदोलन का दिशादर्शन किया, पार्टी में महिलाओं को प्रोत्साहित किया पर बी टी आर की विशेष चिन्ता, उनके खयाल की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

यह सार्वजनिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका तक सीमित नहीं था, बल्कि अपने परिवार की महिलाओं के प्रति साथियों के रवैये पर उनकी तीखी प्रतिक्रियाओं में भी व्यक्त होता था। एक पार्टी सदस्य की शादी पर बोलते हुए उन्होंने कहा, "आशा करता हूं कि यह कामरेड उनमें से नहीं है जो घर से बाहर तो अच्छे कम्युनिस्ट हैं, पर घर में पति-सेवा में विश्वास रखनेवाले अच्छे हिन्दू पति।" बेशक सभी लोग हंस पड़े पर वह नौजवान शर्म से लाल हुआ जा रहा था। बी टी आर ने गंभीर भाव से ये बातें कही थीं क्योंकि महिलाओं के प्रति पुरातन पंथी या पिछड़े विचार, जो कई कामरेडों में प्रचलित हैं, को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

चूंकि वे एक ऐसे नेता थे जो मजदूर वर्ग क्रांति के प्रति प्रतिबद्धता को हर क्षण जीते और व्यवहार में लाते थे, ढोंग या दोमुंहापन उनके बर्दाश्त से बाहर की चीजें थीं। एक बार मैं कामरेड बी टी आर द्वारा लिए गए क्लास में उपस्थित थी। वहां उन्होंने एक वरिष्ठ कामरेड को लताड़ डाला जिन्होंने अपने पिता की मृत्यु पर अपने बाल मुंड़वाए थे। संबंध कमरेड ऐतिहासिक भौतिकवाद पढ़ाते थे। "तुम कार्यकर्ताओं को भौतिकवाद की शिक्षा देते हो और सिर मुंड़वाकर अपना ही विश्वास उजागर करते हो, उन्होंने कहा। एक और मौके पर वे बिगड़ते विचारधारात्मक स्तर की बात कर रहे थे। उन्होंने एक अविस्मरणीय उदाहरण दिया एक कामरेड का जो मंदिर के सामने से गुजरते हुए हर बार अपना सर झुका लिया करता था। जब इसके बारे में उस व्यक्ति से पूछा गया तो उसने जो बताया उसे बी टी आर बड़े नाटकीय अंदाज में कहा करते थे—"कामरेड, मैं एक विश्वस्त मार्क्सवादी-लेनिनवादी हूं—सर इसलिए झुकाता हूं कि मान लीजिए अगर…!!"

का० बी टी आर की जिन्दगी का एक और प्रेरक पहलू था उनकी निरी सादगी। उनकी जरूरतें थोड़ी थीं। कुछ ही महीने पहले जब उनका स्वास्थ्य बिगड़ना शुरू हो गया था, मुझे उनके साथ दिल्ली से बाहर जाने का मौका मिला। बिल्कुल तकलीफ देह यात्रा थी, चूंकि गाड़ी घंटों लेट थी, अंतिम समय में प्लेटफॉर्म बदल दिया गया और हमें जल्दबाजी में पटरियां पार करनी पड़ी। लेकिन यद्यपि उनको इससे तनाव हो रहा था पर उन्होंने एक बार भी गुस्सा या चिड़चिड़ापन नहीं दिखाया। अपनी पीढ़ी से तुलना करके मैं दंग रह गई। हममें से कई लोग ऐसे हैं जो थोड़ी सी असुविधा या अपेक्षाओं के अनुरूप सुविधा पूरी नहीं होने पर शिकायतें करते हैं, नाक भौं चढ़ाते हैं। लेकिन पार्टी के वरिष्ठतम और सबसे सम्मानित नेता जिन्होंने अपनी अंतिम सांस तक इतनी व्यक्तिगत पीड़ाएं झेलीं—बी टी आर का यह स्वभाव उनकी उम्र की चौथाई पर जीते हम लोगों के लिए शर्म का विषय है। और यद्यपि उनकी जिन्दगी कठोर थी, वे खुद जिन्दगी की युवा लसक से भरे, हास्य की मूर्ति थे—हर हंसी की फूट का बेधड़क हिस्सा बन जाते जो उनके चुटकुलों पर फूटती थी।

का० बी टी आर की मेरी अंतिम याद उस दिन की है जब उन्होंने बंबई के लिए-अंतिम-यात्रा की। दूसरे साथियों के साथ उन्हें और विमल दी को हम विदा देने उनके आवास पर पहुंचे थे। कार में बिठाए जाने के बाद

[शेष पृष्ठ 27 पर]

# कामरेड बी टी आर को श्रद्धांजलि

□ प्रेमा श्रोक

कॉमरेड बी. टी आर इस दुनिया में नहीं रहे उनके बिना किसी दुनिया के बारे में सोचना भी बहुत मुश्किल लगता है। हालांकि आज की पीढ़ी मेरे इस कथन की गम्भीरता का अंदाजा भी नहीं लगा सकती लेकिन मैं जानती हूं—क्योंकि अगर छोटो उमर से ही मैं कॉमरेड बी. टी. रणदिवे और कम्युनिस्ट पार्टी के सम्पर्क में न आती तो आज ज्यादा से ज्यादा या तो नारी स्वातन्त्र की मूक प्रवक्ता होती या फिर अमीर परिवार की आज्ञाकारी बहू। बस इससे ज्यादा कुछ न हो पाती।

इसमें कोई शक नहीं कि आजादी के इतने बरसों के बावजूद हमारे देश में महिलाओं पर होने वाला सामाजिक अन्याय, दुर्दशा, यातनाएं और पाशविक क्रूरताएं लगातार बढ़ी ही हैं। आज भी विभीषिकाओं ने हमें चारों तरफ से घेर रखा है। इतनी बदतर स्थिति तो अंग्रेजों के समय में भी शायद न थी। आज भी तमाम बड़े-बड़े कई ऐसे कस्बे हैं जहां हाईस्कूल की कक्षाओं में लड़कियों को अंग्रेजी पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं है।

दरअसल द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत के साथ ही तमाम किस्म की आर्थिक विषमताओं का आगमन भी हुआ, जिससे गरीब तबके की महिलाओं का जीवन खासकर प्रभावित हुआ। मैंने खुद अपने यहां राघू की मां को देखा था जो अपने दो बच्चों को स्थानीय तांगेवाले के सुपुर्दकर खुद दुधमुहें बच्चे को साथ लेकर किसी मुसलमान के साथ रहने चली गई थी। तबसे मैं इन विषमताओं की मूल वजह जानने की कोशिश करने लगी थी और इसी कोशिश में मैंने छात्र आंदोलन में शिरकत भी शुरू कर दी जहां मेरी बड़ी बहन मालू और मैना गवानकर जैसे दूसरे साथी पहले से मौजूद थे। इसी दौरान मैंने राजनीतिक अध्ययन केन्द्रों में भी भाग लेना शुरू कर दिया था। हमारी खुश किस्मती थी कि यहां का. बी. टी. आर. हमारे मुख्य शिक्षक थे।

द्वितीय विश्व युद्ध खतम ही हुआ था, और साम्यवादी दलों पर प्रतिबन्ध था लेकिन साम्राज्यवादियों के खिलाफ एक सशक्त आन्दोलन की तैयारी में हमारे कामरेड और साम्यवादी नेता बहुत सुव्यवस्थित और उत्साहपूर्ण तरीकों से काम कर रहे थे। कामरेड बी. टी. आर. ने ही हमें क्रांतिकारी चेतना और वर्ग दृष्टि कोण से लैस किया था। उन दिनों मार्क्सवादी साहित्य प्रतिबन्धित होने से मिलता नहीं था लेकिन इस कमी को बी. टी. आर. ने पूरा किया। उनके अध्ययन केन्द्र में सभी किताबें मौजूद थीं।

उनकी अध्यापन शैली इतनी सरल सुबोध और असरकारी थी कि उनकी क्लासों में हमने जितना भी सीखा वह सभी कुछ अविस्मरणीय बना हुआ है और आज भी हमारी राजनीतिक और सामाजिक संचेतना का अजय स्रोत बना हुआ है। कम्युनिस्ट पार्टी और कम्युनिस्ट सिद्धान्तों के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर आ रहे बदलावों के दौरान मैं कामरेड बी. टी. आर की ऋणी हूं जिनके मार्गदर्शन में मेराविश्वास अडिग बना रहा। पूर्वी यूरोप के कुछ नेताओं की तर्ज पर मैं कभी भी पूंजीवाद को समाजवाद का विकल्प नहीं मान सकती—निजी स्वतन्त्रता और विदेशी साम्यवादी नेताओं की आत्मघाती भूलों व गलत व्यवहारीकरण पर भी नहीं, मैं हैरान थी कि पिछले तीस वर्षों और समाजवादी देशों में हो रही मौजूदा हलचलों में किस तरह कामरेड बी टी आर ने हममें मार्क्सवाद के बहुत बुनियादी सिद्धान्तों को और भी पुख्ता किया उनका मानना था कि, "सिर्फ साम्राज्यवादी और पूंजीवादी ताकतों को समाज से बेदखल और बेअसर कर देने से ही आदमी के हर तरह के शोषण का खात्मा किया जा सकता है।" कोई अगर वाकई शोषण का अन्त करना चाहता है तो उसे दृढ़ता के साथ मार्क्सवाद की रक्षा के लिए उन असुरी ताकतों से लड़ना ही होगा। इसके अलावा कोई और सत्ता नहीं है। आज तीन से भी ज्यादा दशकों के बाद मुझे याद है का.बी. टी. आर. की वह गर्मजोशी और प्यार जब उन्होंने हम लड़कियों को इन सिद्धातों से प्रशिक्षित किया था। उनकी यह गर्मजोशी दो साल पहले मालू की मृत्यु पर लिखे उनके संवेदना पत्र से भी झलकती है जिसमें उन्होंने लिखा, "मालू जैसे कामरेड कम ही होते हैं, जो जहां कहीं भी होते हैं अपने चारों तरफ सक्रिय गतिविधियों का एक माहौल ही बना लेते हैं।

बहुत समय से दम्मा की मरीज होने के बावजूद

मालू बहुत ही सक्रिय और सचेत कार्यकर्त्री थी। स्थानीय आदिवासी बच्चों को पढ़ाने के लिए उसने एक स्कूल भी चलाया था। कामरेड बी. टी. आर. कुर्सी की राजनीति और निष्क्रियता से बहुत नफरत करते थे।

पार्टी में अनुशासन के मामले में वे बहुत सख्त थे। एक बार भूमिगत रहने के दिनों, हमारे कुछ कार्यकर्ताओं की एक टुकड़ी पार्टी की सदस्यता लेने के लिए उनके पास गई। जहां बातचीत के दौरान उन्होंने जान लिया कि हमारे बीच कुछ लोग अभी भी संशय-अनिश्चितता के शिकार हैं लिहाजा उस दिन सदस्यता के लिए सभी का आग्रह अस्वीकार किया गया हालांकि उस समय यह बात थोड़ी बुरी लगी थी—लेकिन कुछ दिनों के इंतजार और पार्टी और उसके क्रिया-कलापों में हमारे विश्वास की परीक्षा लेने के बाद एक साल में हममें से कुछ लोगों को सदस्य बना लिया गया था।

उनकी शिक्षायें कभी भी मशीनी नहीं रहीं। उनका मानना था कि रूढ़िवादी अन्तर्विरोधों को जीकर कोई भी सच्चा कम्युनिस्ट नहीं बन सकता। इतने बड़े सिद्धांतकार, शिखर पुरुष अक्सर भावना शून्य पाये जाते हैं लेकिन कॉमरेड बी. टी. आर. बहुत भावुक थे। इस बारे में याद आता है जनयुद्धों का समय जब हम जनप्रवाह में इधर-उधर भ्रमित से बहे जाते थे ऐसे में उन्होंने हमारी जीवटता और संजीदगी को बनाये रखा था।

जब हिटलर के नापाक इरादों को रूसी धरती से बाहर खदेड़ने के लिए 'लालसेना' जूझ रही थी उस समय भी उन्होंने कई भाषण-लेख लिखे। ये सभी लेख आज भी मेरे दिलो दिमाग में उतने ही ताजे और असरकारी हैं जितने कि वे लिखे जाने के साथ थे। आज के मौजूदा परिवेश में भी उनके भाषणों-लेखों का मूलस्वर यही था कि साम्यवाद ही आदमी को परिपूर्ण बना सकता है और कोई नहीं।

हिटलर तमाम पूंजीवादी देशों को जीतने के बाद सारी दुनिया को नस्लवाद के खून से रंगदेना चाहता था। लेकिन इन्हीं नापाक इरादों को लेकर हिटलर जब साम्यवादी भूमि साम्यवादी देश में घुसा तो ना सिर्फ उसे और उसके नापाक इरादों को करारी शिकस्त मिली बल्कि फिर कभी न उठने देने के लिए उसे कुचल दिया गया। लाल झन्डे के तले जब लालसेना और वहां के हर आदमी और औरत जब गजब की बहादुरी से हिटलर से लड़े तो समूची दुनिया ने देखा कि मार्क्सवाद ने कैसा हैरतअंगेज आदमी पैदा किया है और देखा कि सोवियत भूमि में कैसे एक खास किस्म की इंसानी नस्ल पैदा हुई है जो इंसानियत के खिलाफ किसी भी तरह के शोषण-फासीवाद को मिटाकर ही दम लेगा और आखिरकार शोषण मुक्त समाज की स्थापना कर दिखायेगा।

आज यही चमत्कारी इंसान 'विभ्रमित' हो गया था लेकिन यकीनन यह 'दिशा भ्रम' बहुत लम्बा नहीं चलेगा जल्द ही वह जान जायेगा कि सच्चाई क्या है और तब वही इंसान एक बार फिर जागेगा।

कामरेड बी टी आर का यही विश्वास था जो हमें भ्रमित होने से बचाता रहा जिसका नतीजा हुआ कि मार्क्सवाद के खिलाफ तमाम दुनियां के षडयंत्रों और छल छरों से हम तनिक भी विचलित नहीं हुए, मैं सोचती हूं कैसे कामरेड बी टी आर ने हमें अंतिम लड़ाई के लिए तैयार किया था।

कैसे 1946 में आर. आई. एन. (रॉयल इन्डियन नेवी) विद्रोह के दिनों उन्होंने समूची राजनीतिक परिस्थितियों को ही मोड़ दिया था जब पार्टी फैसले के मुताबिक उन्होंने बम्बई में आम हड़ताल का आह्वान किया था और बहुत बहादुरी और जिंदादिली से अंग्रेजी शासन को ललकारने वाले नौसेनिक कामरेडों की सुरक्षा के लिए सशस्त्र प्रबन्ध करवा दिये थे। उनकी इसी उत्प्रेरणा और क्रांतिकारी आह्वान पर बम्बई का सारा मजदूर वर्ग ने एक जुट होकर शत्रु पर अपना आक्रोश किया था। यह सब मार्क्सवादी सिद्धान्तों और जनता में उनके अगाध विश्वास का ही प्रतिफल था।

सौभाग्य से कामरेड बी. टी. आर का नेतृत्व, जनता पर उनका अगाध विश्वास उनकी क्रांतिकारी और समझौता नापसंद आत्मा उस समय एक बार फिर मिली थी जब पार्टी के त्रिपुरा, पं. बंगाल, केरल, पंजाब, असम और भी कई क्षेत्रों के हजारों कामरेड आकर कामरेड बी. टी. आर से दिशानिर्देश लेते थे।

मैंने ये सभी दृश्य अपनी आंखों से देखे थे इसलिये मैं खुद को खुश किस्मत मानती हूं। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के नामपर सैकड़ों आदमी और औरतों ने अपनी कुर्बानी दी है। मैं सोचती हूं किस तरह अगर आज कामरेड बी टी आर होते तो पार्टी को अपने चरण चिह्नों पर चलते देखते।

आंखों में आंसुओं और मन में तुम्हारे अधूरे कामों को पूरा करने, उन्हें आगे बढ़ाने के निश्चय के साथ कामरेड बी. टी. आर तुम्हें क्रांतिकारी अभिवादन!

—लाल सलाम

# बी टी आर—कामकाजी महिलाओं पर

**छठे सीटू सम्मेलन, बंबई, 1988 के प्रतिनिधियों को संबोधित**

कामकाजी महिलाओं और उनकी समस्याओं को नजर-अंदाज करना, उनके विभेदपरक शासन के खिलाफ लड़ने की असफलता, उनके हितों की रक्षा की लड़ाई की कमजोरी, ट्रेड यूनियन सदस्यों की तरह उन्हें नियुक्त करने के प्रति उदासीनता और संगठन में जिम्मेदार पदों की ओर प्रोन्नत करने का विरोध—ये भारतीय ट्रेड यूनियन आंदोलन में खासकर स्थापित नेतृत्व में प्रचलित सामंती पुरुष दृष्टिकोण के सूचक हैं। यह भारतीय समाज में महिलाओं और उनकी दयनीय स्थिति को हाशिए पर ढकेलने का दर्पण-चित्र ही है।

स्वतंत्रता के बाद उद्योग के विकास, पूंजीवादी संबंधों के प्रसार, लिंग या धर्म से परे एकता की सांवैधानिक गारंटी और ट्रेडयूनियन आंदोलन की बढ़ी हुई ताकत ये सब इतने ताकतवर सिद्ध नहीं हुए हैं कि महिलाओं के प्रति रवैये में बदलाव आ जाए।

चलते-चलते यह गौर किया जा सकता है कि महिलाओं को नजरअंदाज करने की बीमारी ट्रेड यूनियन आंदोलन की पुरानी बीमारी है जिसके खिलाफ क्रांतिकारी ट्रेड यूनियनों ने गैर-समझौतादी संघर्ष किया है। इस संदर्भ में मार्क्स ने ब्रिटिश और फ्रांसीसी नेताओं की तंगमिजाजी की आलोचना की तथा अमरीकी श्रम आंदोलन की कामकाजी महिलाओं के प्रश्न को उठाने के लिए प्रशंसा की थी। दिसंबर 1868 में कुजेलमैन को लिखे गए पत्र में मार्क्स ने लिखा, "मजाक अलग है, पर अमरीकी श्रम संगठन के पिछले कांग्रेस में महान प्रगति स्पष्ट तौर पर दीखती है, क्योंकि अन्य चीजों के अलावा इसने कामकाजी महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया। जबकि इस मामले में अंग्रेज और उनसे भी अधिक वीर फ्रांसीसी तंग ख्याली के शिकार हैं।" ऐसा नहीं कह सकते कि पश्चिम में तमाम ट्रेड यूनियनों ने यह संकीर्ण दृष्टिकोण अब छोड़ दिया है।

पिछले दशक में भारत की कामकाजी महिलाओं पर निरंतर आक्रमण हुए हैं। उनके खिलाफ हर तरह का भेद-भाव बरता जाता है। खास उद्योगों के लिए संसदीय विधानों के बावजूद समान काम के लिए समान वेतन कागजी वादा ही रहा है।

प्लांटेशनों में, जहां बड़ी तादाद में कभी-कभी पुरुषों से ज्यादा, महिलाएं काम करती हैं, समान वेतन का कोई चिह्न नहीं दीखता। मातृत्व भुगतान से बचने के लिए बड़ी संख्या में महिलाओं को काम से निकाल दिया गया है। पारंपरिक उद्योगों में मशीनों के लगाये जाने से भी उनकी जबर्दस्त छंटनी हुई है। 50 हजार से अधिक महिला कोयला श्रमिकों को निकाल दिया गया और यूनियन ने एक भी आवाज नहीं उठाई। कोयला उद्योग में गुंडाबल की तलाश में लगे अधिकारियों ने महिला एवं पुरुष, दोनों पुराने मजदूरों को निकालने का प्रयास कर रहे हैं—जबकि युवा मजदूरों से काम के वायदे किए जा रहे हैं। शर्त यह है कि विकल्प पुरुष सदस्य ही होगा। अधिकारी कामकाजी महिला को उसके परिवार का सदस्य मानने के लिए तैयार नहीं हैं। यह सुविधा कुछ लाभों के अधिकार को मानने के उद्देश्य से केवल युवा मजदूरों की मांओं को दी जा रही है। सभी उद्योगों में महिलाओं को सबसे कम वेतन वाले काम दिए जाते हैं। प्रोन्नति में भी भेदभाव है। यदि महिलाएं सेवा में वरिष्ठ या काम के लिए सक्षम भी हों तो उन्हें प्रोन्नति मिलने में मुश्किलें पेश आती हैं। और इन सबके ऊपर महिलाओं का यौन-शोषण होता है।

सरकार और मालिक कानून द्वारा अनुमोदन पालना जैसी न्यूनतम सुविधाएं देने को भी तैयार नहीं है। चतुर्थ वेतन आयोग ने निरी बेशर्मी से अनुशंसा की है कि दो बच्चों की मांओं को मातृत्व सुविधाएं रोक दी जाएं।

ट्रेड यूनियन और उनके नेता महिलाओं के प्रति इस विभेद के प्रति मूक दर्शक बने रहे हैं। ऐसा लगता है उनकी 'दुनिया के मजदूरो एक हो' की गूंज में महिला मजदूर शामिल नहीं हैं। इस मामले में सभी दोषी हैं—औद्योगिक मजदूर यूनियनों के नेता से लेकर मध्यवर्गीय कर्मचारियों के नेता और उच्च शिक्षित और अच्छे वेतन पाने वाले लोग तक। प्राचीन 'संस्कृति' प्राचीन 'संस्कृति' है चाहे लाख शिक्षा आए।

अपने मद्रास सत्र में सीटू ने अपने यूनियनों से आह्वान किया था कि वे महिलाओं की ओर ध्यान दें। उनकी समस्याओं उनके खिलाफ विभेदों से लड़ें। महिलाओं की

# का. बी टी आर को श्रद्धांजलि

**पी० बी० रांगणेकर**

एक महीना से ज्यादा हुआ होगा का० बी टी आर के गुजरे। वे अब हमें राह दिखाने फिर नहीं आएंगे। लेकिन कितना मुश्किल यह विश्वास करना हम सबों के लिए जो पिछले 60 सालों से उनके पास समस्याएं लेकर जाते और पूर्णरूपेण संतुष्ट होकर लौटते। ये छः दशक अनगिनत यादों के हैं—उन राजनीतिक मसलों की यादों के, जो उन्होंने हल किए, सैद्धांतिक गुत्थियों की जो उन्होंने सुलझाईं, शिविरों की जो उन्होंने चलाईं, वर्ग दुश्मन के षडयंत्रों की, जिसका पर्दाफाश उन्होंने किया। पर मुझे लगता है कि इतने आयामों के धनी क्रांतिकारी व्यक्ति की यादों के बारे में न्यायपूर्वक लिख सकना मेरे बूते के बाहर है। अस्तु, मैं उनकी उपलब्धियों के कुछ चुनिंदा पहलुओं को निरूपित करने का एक विनम्र प्रयास करता हूँ।

मैं उनसे पहले-पहल 1929 में मिला जब एस वी देशपांडे ने उस समय के प्रसिद्ध गिरनी कामगार यूनियन का कार्यभार ग्रहण किया था—मेरठ षडयंत्र मामले के तुरन्त बाद। वे हमारे घर आए थे (मेरे भाई के नजदीकी दोस्त थे)। आम छंटनी के खिलाफ एक बड़ी हड़ताल चल रही थी। हड़ताल टूट गई, उन्हें सजा हो गई और वे एक साल बाद लौटे जब सुधारवादी कंडालकर ने यूनियन का नेतृत्व थाम लिया था।

संघर्ष के लिए, 1933 में यूनियन नेतृत्व को जीतने की कठिन लड़ाई हुई। आंशिक हड़तालें चल रही थीं। मुझे याद है का० बी टी आर ने हमसे कहा था कि 35 आंशिक हड़तालों में से 26 का नेतृत्व वे और उनके कम्युनिस्ट साथी कर रहे थे। इससे कंडालकर की रीढ़ टूट गई और सुधारवादियों का सफाया हो गया। लेकिन संघर्ष इतना दुष्कर और निरंतर था कि वे पूना में अपने मरणापन्न पिता को देखने के लिए एक दिन भी नहीं निकाल सके। अंत में जब उनको थोड़ी मोहलत मिली और जब वे पूना गए, तो उनके भाई श्मशान घाट से लौट रहे थे! अपने मृत पिता के शरीर का दर्शन भी उनको मयस्सर नहीं हुआ (मुझे इसका पता 1940 में येरावडा जेल में चला जब मैंने अपना भतीजा खो दिया और शोक संतप्त था। इस घटना ने मुझे सिखा दिया कि क्रांतिकारी किस मिट्टी से बनते हैं।)

इतिहास ने 1963 में खुद को 'दुहराया'—जब उनकी जेल यात्रा के दौरान ही ($3\frac{1}{2}$ वर्ष के लिए) उनकी मां का देहावसान हुआ। जब कांग्रेस नेताओं ने अंततः उन्हें मां को मृत्युशैय्या पर देखने के लिए भेजने का निर्णय लिया तब वे अभी पहुंच ही पाए थे कि मां की अंतिम सांस निकल गई।

एक बार फिर 1943 में ऐसी कर्तव्यपरायणता की झलक मिली, जब संयुक्त कम्युनिस्ट पार्टी ने उन्हें मास्को भेजने का निर्णय लिया। निमोनिया के पुराने मरीज, और फेफड़े की दुर्बलता ग्रस्त उनको डॉक्टरों ने 20 से 30 सिगरेटें घटाकर 2 से 3 कर देने की सलाह दी थी। 15 मिनट बाद जब मैंने उनको उनकी सिगरेट का पैकेट दिया तो उन्होंने मुझे रोक दिया। मैं डॉक्टर की सलाह के अनुसार उनसे तर्क करता रहा कि दो तीन तो पी ही जा सकती है—पर व्यर्थ। उन्होंने कहा—अब सिगरेट नहीं। अपने बाकी के जीवन में उन्होंने—एक ऐसे आदमी ने जो मौका पड़ने पर एक दिन में पचास पी सकता था—एक भी सिगरेट नहीं पी। वाकई यह एक कम्युनिस्ट स्वानुशासन का उत्कर्ष था।

साम्राज्यवाद के प्रबल शत्रु, राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई से शुरूआत करके उन्होंने खुद में मार्क्सवादी अध्ययन का इस्पात भरा। मुझे एक बार याद है उन्होंने खुद हमसे ऐसा कहा था। तीस के दशक में वे मोरारजी मिल पर एक गेट मीटिंग में भाषण दे रहे थे। तब लाउडस्पीकर नहीं थे और उन्हें ऊंचा बोलना पड़ रहा था। एक गाड़ी नजदीक आकर रुकी और एक अंग्रेज उतरा। 'तुम उन्हें क्यों उकसा रहे हो? इससे हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़क सकते हैं' उसने चेतावनी दी। विसंगति देखिए, वह बंबई सरकार का गृह सचिव था। बी टी आर उसकी औकात पर चकित थे। उन्होंने कहा कि लाल झंडे की वजह से मजदूर वर्ग इलाके में दंगा-फसाद नहीं होगा। अफसर चला गया। एक सप्ताह के भीतर ही बंबई में सांप्रदायिक खून खराबा हुआ। बेशक यह सूती उद्योग क्षेत्र की सीमाओं पर, जहां लाल झंडे की तूती

बोलती थी—पहले की तरह ही रोक दिया गया। लेकिन सबक जरूर मिली।

बाद में जब 1936 में, नए चुनावों के थोड़ा पहले, ब्रिटिश अधिकारियों ने फिर दंगे आयोजित किए। दी पी सी सी अध्यक्ष नारीमन, एक अच्छे राष्ट्रवादी पर वर्ग समझ के मामले में निहायत गरीब, ने मांग की कि ब्रिटिश सेना को अविलंब दंगे पर रोक लगानी चाहिए। राष्ट्रीय प्रेस ने भी उन्हें समर्थन दिया—दंगे के पीछे के हाथ को बिना समझे-बूझे। बी.टी.आर. के साथ हुई एक वक्ती बातचीत ने मुझ पर इस मांग के औचित्य का ढकोसला उजागर कर दिया। नारीमन आक्रामक हो गए। फिर बी टी आर ने कुशाग्र जवाब दिया। नतीजा—मात्र हम दो कम्युनिस्टों ने छात्र यूनियन के बहुसंख्यक 19 लोगों को अपने अपने मत का अनुगामी बना लिया। चूंकि वे ईमानदार राष्ट्रवादी थे—ब्रिटिशों से लड़ने की इच्छा उनमें कूट-कूटकर भरी थी—बी टी आर के अकाट्य तर्कों (बेशक मेरे नाम ही) ने उन्हें जीत लिया। बाद के चुनावों में उनके दृढ़ साम्राज्यवाद-विरोधी रवैये की वजह से ही हम अपनी विश्वसनीयता कांग्रेस के खिलाफ भी बनाये रख सके।

बी टी आर का एक और महान पहलू था मार्क्सवाद की उनकी शिक्षा—जिसे शायद मार्क्सवाद 'जीना' भी कहा जा सकता है। जब 1940 में उन्होंने हमें बिना किसी पुस्तक के 'पूंजी' पढ़ानी शुरू की तो विस्मयविमुग्ध हम जान पाए कि मार्क्सवाद तो उनकी सांस में बसता है। अनुच्छेद के अनुच्छेद उद्धृत करते गए वे (जो हमारे हस्त टिप्पणियों में दर्ज हैं)—हलांकि 'पूंजी' उन्होंने 1934 में, छः साल पहले, कराची, हैदराबाद जेल में पढ़ी थी।

बाद में उन्होंने हमसे 'पूंजी' की प्रति से ही पढ़ने की जिद की। (उन्होंने जेल के दो मजदूर कामरेडों को भी उसे पढ़ाया)। सप्ताह में एक बार परीक्षा होती और हम हमेशा फेल करते। यह मार्क्सवाद का जिन्दगी पर आरोपण होता। हम 'पूंजी' की मदद ले सकते थे, पर क्या फायदा? अब हम हार जाते तो वे हमें मुस्कुराते हुए दिखाते कि मार्क्सवाद को गम्भीरतापूर्वक इस्तेमाल करने से कैसे निदान निकल सकता था। (एक उदाहरण देखें : प्रश्न : यदि सामाजिक तौर पर आवश्यक श्रम समय ही किसी चीज के मूल्य को निर्धारित करता है के रेम्ब्रांट के चित्र को इतनी बड़ी कीमत क्यों है, जबकि एक स्थानीय चित्र का कोई कीमत नहीं? उसी तरह विश्व क्रिकेटर ब्रैडमैन और एक सामान्य बल्लेबाज की तुलना से जुड़े सवाल आदि।)

दमन के खिलाफ नहीं झुकने वाले उनके विश्वास का एक अच्छा उदाहरण है नवंबर 1962 की एक घटना। एक स्थानीय मराठी दैनिक 'नव काल' ने उनसे भारत, चीन तनाव पर उनका इन्टरव्यू लिया। 'किसी भी समाजवादी देश को, अपने अस्तित्व के चलते ही, अपने पड़ोसी पर आक्रमण करने की कोई जरूरत नहीं' उन्होंने कहा। इन्टरव्यू के छपते-छपते झगड़े शुरू हो गए थे। संपादक बी टी आर तक दौड़ा आया। लेकिन बी टी आर दृढ़ थे। क्या वे अपने बयान को झुठलाएंगे, (जैसा कई कांग्रेसी नेताओं ने किया? बी टी आर ने सीधे-सपाट तौर पर इसे रद्द कर दिया, और फलस्वरूप लगभग उसी दिन से 3½ वर्ष कैद में रहे। संपादक ने हाल में लिखे संपादकीय श्रद्धांजलि में इसका उल्लेख किया, यद्यपि उसने मतभेदों को भी स्पष्ट रखा।

बी टी हमेशा वर्ग-चेतना की हिमायत करते। यदि कोई वक्ता सारे कांग्रेस-विरोधी सरकारों को एक में गड्डमड्ड करता तो उसकी खिंचाई होती ही थी। प० बंगाल केरल और तब (त्रिपुरा भी) की सरकारें मजदूर वर्ग की पार्टी की सरकारें हैं और हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम उनमें और आम, राह चलती बुर्जुआ·· भूमिपति पार्टियों में विभेद करें—उनकी सीख होती। जब सत्तर के दशक में प० बंगाल को वर्ष-दर-वर्ष अर्द्धफासीवादी आतंक का सामना करना पड़ा, तो बंबई की यात्रा के दौरान उन्होंने मुझसे दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि हम महाराष्ट्र के लोग प० बंगाल की रक्षा के लिए नहीं जा सकते। मुझे एक घटना याद आ रही है। उन्हें जब एक बार कलकत्ता के लिए रवाना होना था तो मैंने टैक्सी लेने का आमंत्रण दिया। वे रूक्ष तौर पर मुस्कराएं और मैं विस्मयमुग्ध था। कुछ दूर चलने के बाद जब मैंने वजह पूछी, यह भी पूछा कि क्या मेरी किसी बात से वे दुःखी हैं। उन्होंने उदास सी मुस्कुराहट के साथ कहा, "बंगाल में जब हम टैक्सी लेते हैं तो कार के दोनों ओर एक-एक कामरेड बैठते हैं, क्योंकि अचानक आक्रमण का भय होता है। उन्हें हर दिन, हर पल जान का जोखिम रहता है। तुम यहां के कामरेड उनके खतरे को दूर करने के लिए

[शेष पृष्ठ 30 पर]

# का. बी. टी. आर. और महिलाओं की समस्याएं

□ **सुरिंदर कौर, पंजाब**

महिलाओं की समस्याओं, महिलाओं के आंदोलन और उनकी मुक्ति के प्रति का. बी टी रणदिवे का परिप्रेक्ष्य उस आदमी का परिप्रेक्ष्य था जिसे भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति की गहरी समझ थी और जो पूरी तरह उनके संघर्ष में शामिल था। वे हर तरह की नाबराबरी को मिटा देने के पक्ष में थे। समाजवादी समाजों की तरह महिलाओं की मुक्ति के लिए समान कानूनों की जरूरत को लेकर उनके पास एक साफ दृष्टि थी।

वे इस विचार के समर्थक थे कि महिलाओं की मुक्ति को शोषण की विचारधाराओं से पूरी तरह अलग-थलग करके नहीं देखा जा सकता। उन्होंने कहा :

"पूंजीवादी और उसकी पूर्ववर्ती शोषणवादी प्रणालियों ने महिलाओं पर अन्यायपूर्ण सामाजिक स्थिति थोपी है। उन्हें सामाजिक उत्पादन में हिस्सेदारी से अलगकर घर की चारदीवारी में बंद किया है।"

भारत में भी जैसा कि उनका मानना था कि महिला आंदोलन तब तक बहुत लाभकर स्थिति हासिल नहीं कर पायेगा जब तक यह उच्चवर्ग तक सीमित रहेगा। इसलिए समाज के छोटे से छोटे तबके को इसमें शामिल करने की जरूरत है, और यही वजह है कि आजादी के बाद भी स्थिति इतनी खराब है।

वे महिलाओं की स्वतंत्रताओं के सामने हिंदू और मुस्लिम तत्ववादियों की ओर से आने वाली चुनौतियों को बहुत अच्छी तरह समझते थे। शाहबानों केस और देवराला कांड से सबित हो गया कि ये चुनौतियां कितनी खतरनाक हैं और इनका मुकाबला करने में केवल कांग्रेस (आइ) के नेतृत्व वाला महिला संगठन ही बुरी तरह विफल नहीं रहा बल्कि दूसरी बुर्जुआ पार्टियां भी खामोश दर्शक बनी रहीं।

आजादी के बाद महिलाओं के रुख में आये परिवर्तन से वे वाकिफ थे। लेकिन वे इस असलियत से भी वाकिफ थे कि महिलाओं की बड़ी संख्या अशिक्षित है। हालांकि वे यह जानते थे कि अपने मताधिकार का इस्तेमालकर सरकार बदलने में महिलाओं ने अहम भूमिका अदा की है। लेकिन महंगाई और बेरोजगारी की सबसे ज्यादा शिकार वे ही बनती हैं।

उन्होंने विश्व स्तर पर और भारत में भी महिलाओं की प्रगति को नोट किया था। दहेज विरोधी और समान वेतन जैसे कानून पास करवाने में सरकार में रहनेवाली महिलाओं की उपलब्धियों को भी नोट किया था। उन्होंने नोट किया था कि महंगाई और सामंती उत्पीड़न के खिलाफ महिलाओं की सक्रिय भागीदारी है।

उन्होंने देश में एक स्वतंत्र महिला आंदोलन की जरूरत पर जोर दिया जो जनतांत्रिक और मजदूर आंदोलन के साथ जुड़कर चले। उन्होंने सामंती दृष्टिकोण और महिलाओं के हितों के लिए लड़ने के लिए पुरुषों के बड़े हिस्सों में जो उदासीनता पायी जाती है, उससे उबरने की जरूरत पर जोर दिया।

उन्होंने रेखांकित किया कि अगर ट्रेड यूनियन नेता महिला मजदूरों की रक्षा के काम को गंभीरता से लें तो महिला संगठन मजबूत बन सकता है। उन्होंने ट्रेड यूनियन आंदोलन के नेताओं का आह्वान किया कि ट्रेड यूनियन आंदोलन में महिलाओं की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करें। यह का. बी. टी. आर ही थे जिन्होंने जनता के जनवाद को हासिल करने के संघर्ष में महिला आंदोलन को मूलगामी बनाने का आह्वान किया।

---

[पृष्ठ 29 का शेष]

क्या कर रहे हो ? तब मैंने महसूस किया कि शाम के उनके भाषण के उनके शब्द कितने सही थे। हत्यारे के चाकू की धार, उसके पिस्तौल का धुंआ—इन सबसे ही तो आज का प० बंगाल बना है।

अपनी पूरी जिन्दगी में—62 वर्ष के अथक श्रम का मूल्य देकर, उन्होंने अब समूचा सामर्थ्य लगातार मजदूर वर्ग के लिए एक हथियार खरीदा—मार्क्सवाद-लेनिनवाद का हथियार—एक ऐसा हथियार जो सभी शोषण का अंत करे और बेहतर जिन्दगी के द्वार खोले। इसकी सरीकता में उनके अमरविश्वास की वजह ने उनके हर संकट में दृढ़ रखा।

बी टी आर जैसे कामरेड कुछ ही होते हैं। वे किसी और मिट्टी से बने होते हैं। यदि हम किसी गंभीर समस्या से ग्रस्त होते, तो वे हमें रूस, चीन, वियतनाम और कोरिया के मजदूर वर्ग की गौरवशाली उपलब्धियों का उद्धरण देते। 'यदि लाखों लोग इसे कर सकते हैं—'असंभव' को कर सकते हैं—तो आप लोग भी कर सकते हैं' वे कहा करते।

इसी अमर विश्वास के साथ हमें आगे बढ़ते रहना होगा—सच है बिना अपने बी टी आर के ही, पर उन्हीं के पदचिह्नों पर। उनकी शिक्षा का अनुगमन करना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

# मई दिवस समारोह

# की

# शताब्दी वर्ष पर

सांप्रदायिकता व अलगाववाद के खिलाफ
तथा ट्रेड यूनियनवाद एवं जनवादी अधिकारों
का परचम ऊंचा उठाए रखने
काम के अधिकार को संवैधानिक अधिकार
का दर्जा दिलाने एवं बेरोजगारी के खिलाफ लड़ने
जीवन यापन के स्तर को ऊंचा उठाने के संघर्ष में
दुनिया के मजदूरो, एक हो

पश्चिम बंगाल सरकार

ICA 1992/90

# हिमाचल प्रदेश की आंगनवाड़ी महिलाएं संघर्ष के लिए तैयार

□ **किरण**

हिमाचल में करीब 34 प्रोजेक्ट हैं। जिनमें से एक प्रोजेक्ट में (तीन जिलों में) हमारा काम है। तथा जिसके लगभग 1000 सदस्य हैं। जो कि संघर्ष करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उक्त जगह धरना भी दिया गया है। हिमाचल में सभी स्थानों पर कुछ न कुछ समस्याएं हैं कारणवश हम सभी जगहों पर पहुंच पाने में असमर्थ रहे हैं। हमारे अनुरोध पर हिमाचल सी. आई. टी. यू. स्टेट कमेटी ने तय किया है कि जल्दी ही एक सरकुलर निकाल कर, सभी जगहों पर (जहां हम पहुंच नहीं पाये हैं) सी. आई. टी. यू. के कर्मचारियों को यह कार्य सौंपा जाएगा कि वे सभी आंगनवाड़ी प्रोजेक्ट के साथ सम्पर्क स्थापित करें।

वैसे हिमाचल एक छोटी जगह है इस कारण हम 1000 आंगनवाड़ी महिलाएं भी काफी कुछ करने में समर्थ हैं। हमें केवल केन्द्र से कार्यक्रम की प्रतीक्षा है। हिमाचल में अभी मेडीकल लीव की व्यवस्था नहीं है। और आंगनवाड़ी कर्मचारियों को 300 रु० और सहायिका को 110 रुपये दिया जाता है, जो कि बहुत कम है।

पिछली आंगनवाडी महिलाओं की बैठक में पंजाब से आए हुए कामरेड ने कहा था कि उन्होंने संघर्ष के द्वारा ये मांग हासिल की है कि सुपरवाइजर, आंगनवाड़ी कर्मचारियों में से ही चुने जाएं। यह सरकुलर सभी राज्यों की आंगनवाड़ी, महिलाओं को भेज दिया जाए, ताकि हम सरकार से मांग कर सकें कि पंजाब की तरह यह सुविधा यहां पर भी लागू की जाए।

हिमाचल प्रदेश में एक योजना काफी समय से लागू है जिसके तहत लगभग 150 पौष्टिक आहार केन्द्र खोले गये हैं। जो आई. सी. डी. एस. के साथ ही सम्बधित हैं। जिसका समय एक घंटा रखा गया जबकि कर्मचारियों का ढ़ाई से तीन घंटा समय लग जाता है। उन्हें केवल 60 रुपये प्रतिमाह वेतन दिया जाता है। इससे आंगनवाड़ी महिलाओं से सम्बन्धित महिलाओं की नियुक्ति नहीं की गई हैं।

हिमाचल में जब कभी सी. डी. पी. ओ. कार्यालय में बैठक बुलाई जाती है तो प्रत्येक कर्मचारी का लगभग 20 रुपये खर्च होता है। इसके अतिरिक्त बैठक के लिए मकान की व्यवस्था भी स्वयं आंगनवाड़ी महिलाओं को ही करनी पड़ती है तथा जिसका किराया जो कि 15 से 50 रुपये तक आता है, खुद ही भुगतान करना पड़ता है। पोषाहार भी तोल कर नहीं दी जाती है।

हिमाचल की संगठित आंगनवाड़ी महिलाएं हर संघर्ष के लिए तैयार हैं। और जल्दी ही कोई संघर्ष चाहती है।

# अखिल भारतीय महिलाओं की तैयारी समिति

जून 18, 1990

जैसा कि एक जून, 1990 को हुए अखिल भारतीय आंगनबाड़ी महिलाओं की समन्वय समिति की बैठक में निर्णय लिया गया था कि आगनबाड़ी कर्मचारियों का एक सामूहिक प्रदर्शन किया जाएगा, उसके अनुसार 7 अगस्त 1990 को बोट क्लब पर एक प्रदर्शन होगा तथा बाद में एक सभा आयोजित की जाएगी, जिसके पश्चात् प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन दिया जाएगा। महिलाएं मंडी हाउस में 7 अगस्त, 1990 को प्रातः 9.30 बजे एकत्रित हो जाएंगी। आंगबाड़ी महिलाओं का मार्च प्रातः 10 बजे शुरू होगा तथा दोपहर 2.30 बजे समाप्त हो जाएगा।

कामरेड, आंगनवाड़ी महिलाओं की महत्वपूर्ण और जरूरी मांगों को देखते हुए तथा बैठक में पंजाब, हरियाणा उ. प्र., हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों से आई हुई आंगनबाड़ी महिलाओं के उत्साह-पूर्ण वक्तव्य तथा आंगनबाड़ी महिलाओं की जरूरी मांगों को देखते हुए प्रदर्शन शानदार होना चाहिए। राज्यों से आग्रह है कि वे समुचित पोस्टर, बैनर आदि तैयार कर साथ में लाएं।

धन्यवाद,

आपकी साथी,
**बिमल रणदिवे**
संयोजिका

# अखिल भारतीय फेडरेशन के गठन का फैसला

देश की आंगनवाड़ी मजदूरिनें अपनी सेवा शर्तों में कुछ सुधार लाने के लिए पिछले कई वर्षों से संघर्षरत हैं। एक दिलचस्प बात यह है कि इन मजदूरिनों को 'समाज-सेवी' माना जाता है और इसलिए मजदूरी की जगह 'मान-देय' देकर बेतरह ठगा जा रहा है। सरकार के कार्य क्षेत्र में आनेवाली सेवा में लगी इन महिलाओं को गूंगा बनाकर उनकी निरंतर उपेक्षा की जाती रही है और उत्पीड़न किया जाता रहा है।

## अखिल भारतीय फेडरेशन

इस पृष्ठभूमि में पिछले कुछ अर्से में कुछ राज्यों में आंगनवाड़ी सेविकाओं तथा सहायकों के संगठन सामने आये हैं। आंगनवाड़ी मजदूर इन्हीं दो श्रेणियों में विभाजित है। आंगनवाड़ी महिलाओं के संगठित होने की इसी प्रक्रिया के अगले कदम के रूप में सीटू की कामगार महिलाओं से संबंधित समन्वय समिति के तत्वावधान में 1 जून को दिल्ली में आंगनवाड़ी सेविकाओं तथा सहायकों के अखिल भारतीय संगठन की तैयारी समिति की बैठक हुई। 9 राज्यों से आंगनवाड़ी मजदूरिनों के 30 प्रतिनिधियों ने इस बैठक में हिस्सा लेकर, अखिल भारतीय संगठन के निर्माण पर विचार किया। भवतोष राय ने बैठक की अध्यक्षता की, जो पश्चिम बंगाल राज्य सरकार कर्मचारी समन्वय समिति के प्रमुख नेताओं में एक हैं और राज्य के आंगन-वाड़ी मजदूरों के नेता हैं।

संगठन की तैयारी समिति की संयोजक, विमल रणदिवे ने बैठक के सामने अपनी रिपोर्ट पेश की। अपनी रिपोर्ट में उन्होंने बताया कि किस प्रकार, जब राजीव गांधी की कांग्रेस (आइ) की सरकार थी, सरकार के नेता के नाते आंगनवाड़ी मजदूरों के सिलसिले में उनसे बात की गई थी, उन्होंने सीधे-सीधे 'मानदेय' राशि बढ़ाने से इनकार कर दिया था और कहा था आंगनवाड़ी सेविकाओं की संख्या घटाकर ही यह राशि बढ़ायी जा सकती है। इसलिए अब राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से महिलाओं को यह उम्मीद बंधी है कि उनकी बात ज्यादा सहानुभूतिपूर्वक सुनी जायगी और उनके जीवन तथा काम के हालात में सुधार लाया जायगा। लेकिन, अब तक हुआ क्या है? हालात सुधरने के बजाय बिगड़ते ही गये हैं। कीमतें बढ़ रही हैं। महिलाओं को रोजगार से बाहर धकेला जा रहा है। फैक्टरियां बंद हो रही हैं, जिससे महिलाओं के बीच बेरोजगारी और बढ़ी है। इस सबका, आंगनवाड़ी महिलाओं समेत आम तौर पर महिलाओं की दशा पर बुरा असर पड़ा है।

रिपोर्ट में याद दिलाया गया कि नियमित कर्मचारियों का दर्जा दिए जाने की मांग को लेकर, पिछले साल यूनियन के नेतृत्व में हुए प्रदर्शन में अनेक आंगनवाड़ी मजदूरिनों ने हिस्सा लिया था। अब कहीं ज्यादा सुसंगठित तथा व्यापकतर कार्रवाई का समय आ गया है।

बैठक में हुए विचार—विमर्श में हिस्सा लेते हुए, प० बंगाल आंगनवाड़ी महिला ऐसोसिएशन की महा-सचिव, नीलिमा मैत्र ने बताया कि किस प्रकार वाम मोर्चे के राज में आंगनवाड़ी मजदूरिनों की हालत सुधरी है और उन्होंने मातृत्व लाभ तथा उत्सव बोनस जैसे लाभ हासिल किए हैं। राज्य की आंगनवाड़ी महिलाओं ने 10 जुलाई की अखिल भारतीय कार्रवाई में भी हिस्सा लिया था और अपने संघर्ष के जरिये वे, 7-8 साल के अनुभव के बाद सुपरवाइजर के पदों के लिए आंगनवाड़ी सेविकाओं की पदोन्नति और संबद्ध सार्वजनिक परीक्षा में बैठने का अधिकार हासिल कर सकी है। राज्य में एसोसिएशन की सदस्य संख्या 13,600 है।

इसी प्रकार, सरोजिनी बालानंदन ने बताया कि किस प्रकार केरल में वामपंथी शासन में, आंगनवाड़ी मजदूरिनों की हालत में कुछ सुधार हुआ है।

इससे ठीक उलटी है हरियाणा, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों की स्थिति। इन राज्यों की महिला नेताओं ने अपने कटु अनुभव प्रस्तुत किए। मसलन उत्तर प्रदेश में आंगनवाड़ी सेविकाओं को दिया जा रहा मानदेय, केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित 235 रु. महीना की दर से बहुत कम है। उधर मध्य प्रदेश में, आंगनवाड़ी महिलाओं पर अनिवार्य नसबंदी थोपने के लिए उन्हें तरह-तरह से परेशान किया जा रहा है। पंजाब की राजवंत कौर ने पदोन्नति के रास्तों की

जरूरत पर जोर दिया था आग्रह किया कि प्रोजेक्ट कद्र में एक निश्चित अवधि तक आंगनवाड़ी सेविका के रूप में काम करने के बाद, अपने आप सुपरवाइजर पद पर पदोन्नति की व्यवस्था रहनी चाहिए। बहस के दौरान बहुत से लोगों ने, बाल विकास कार्यक्रम कार्यालय (सी डी पी ओ) में व्याप्त भ्रष्टाचार की भी कहानियां सुनायीं।

महाराष्ट्र की किरण मारे ने बताया कि किस प्रकार बेकारी के खिलाफ दिल्ली में गत 8 सितंबर के प्रदर्शन में हिस्सा लेने के लिए राज्य की कांग्रेस (आई) सरकार ने 6 आंगनवाड़ी महिलाओं को निलंबित कर दिया था और उनकी मजदूरी काट ली थी। उत्तर प्रदेश तथा हिमाचल में आंगनवाड़ी महिलाओं को परेशान किये जाने के मामले सामने आये हैं।

आंध्र प्रदेश की पुष्पावती ने बताया कि राज्य के विभिन्न जिलों में कमेटियां गठित की गयी हैं, जिन्हें अब एक संयोजन समिति के तहत संगठित करने की कोशिश की जा रही है।

सभी प्रतिनिधियों का, खासकर पंजाब व हरियाणा के प्रतिनिधियों का आग्रह था कि आगे कोई कार्रवाई, विशेष रूप से मानसून सत्र के दौरान संसद पर प्रदर्शन का आयोजन अवश्य किया जाय।

अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति नेता अहिल्या रांगणेकर तथा सुशीला गोपालन, चमनलता (हिमाचल प्रदेश), सुरेंद्र कौर (पंजाब), शालिनी घोष तथा मेनाली चक्रवर्ती (पं. बंगाल) और पटवर्धन (मध्य प्रदेश) ने भी बहस में हिस्सा लिया।

बहस के बाद बैठक ने निम्नलिखित फैसले लिये :

1. 10 जुलाई का दिन आंगनवाड़ी मजदूरिनों के अखिल भारतीय मांग दिवस के रूप में मनाया जायगा। इस रोज, मांगपत्र को लेकर संबद्ध अधिकारियों से प्रतिनिधिमंडल भेंट करेंगे और धरनों तथा कार्रवाई के अन्य रूपों का आयोजन किया जायगा।

2. जहां तक संभव होगा, अगस्त के शुरू में आंगनवाड़ी महिलाओं का संसद पर प्रदर्शन आयोजित किया जायगा। यह कार्रवाई दस ठोस मांगों पर आधारित होगी, जिनमें सेवाएं नियमित किये जाने तक आंगनवाड़ी सेविकाओं को दी जानेवाली राशि 600 रु. तथा सहायकों

[शेष पृष्ठ 6 पर]

## आंगनवाड़ी प्रतिनिधिमंडल मंत्री से मिला

आंगनवाड़ी सेविकाओं के अखिल भारतीय संगठन की तैयारी समिति की ओर से प्रतिनिधिमंडल ने इस 2 जून को केंद्रीय श्रम तथा कल्याण मंत्री से मुलाकात की. सांसद मोहम्मद अमीन ने प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। प्रतिनिधिमंडल ने आंगनवाड़ी मजदूरिनों की निम्नलिखित मुख्य समस्याएं उठायीं :

—आंगनवाड़ी सेविकाओं के लिए मानदेय राशि बढ़ाकर 600 रु० महीना और सहायकों के लिए 400 रु० महीना करना।

—सभी राज्यों में सर्कुलरों तथा निर्देशों के पालन में समानता लाना।

—आंगनवाड़ी सेविकाओं तथा सहायकों को पदोन्नति।

—पंजाब तथा हरियाणा आदि कुछ राज्यों द्वारा अविचारपूर्ण ढंग से थोपी गयी स्थानांतरणों की नीति समाप्त की जाय।

प्रतिनिधिमंडल ने मंत्री महोदय का ध्यान इस तथ्य की ओर खींचा कि इन समस्याओं को भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के सामने भी उठाया गया था, जिन्होंने इन मुद्दों पर कोई भी कार्रवाई करने से इनकार कर दिया था।

मंत्री महोदय ने इन समस्याओं की जानकारी का प्रतिनिधिमंडल को पूरा-पूरा यकीन दिलाया और इस सिलसिले में आगे की कार्रवाई के लिए प्रधानमंत्री से बातचीत करने का यकीन दिलाया। प्रतिनिधिमंडल ने सरकार को चेतावनी दी कि अगर ये न्यूनतम मांगें पूरी नहीं की जाती है, तो आंगनवाड़ी मजदूरिनें पूरे देश के पैमाने पर अपना आंदोलन जारी रखने के लिए मजबूर होंगी।

प्रतिनिधिमंडल में, आंगनवाड़ी सेविकाओं के संगठन की अखिल भारतीय तैयारी समिति की संयोजक, विमल रणदिवे के अलावा अहिल्या रांगणेकर (महाराष्ट्र), सुरेंद्र कौर (पंजाब), नीलिमा मैत्र (प० बंगाल), पुष्पावती (आंध्र प्रदेश), सरला शर्मा तथा सतपाल कौर (उ०प्र०), कुलदीप कौर (हरियाणा) और भवतोष राय (प०बंगाल) शामिल थे।

सीटू के अखिल भारतीय कामकाजी महिला समन्वय समिति के लिए विमला रणदिवे की ओर से 6, तालकटोरा रोड, नई दिल्ली-110001, (फोन नं० 384071) से सम्पादित और प्रकाशित तथा प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, ए-21 झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

# पुत्रवधू की श्रद्धांजलि

मौत इतना गुरूर मत कर !

उसकी हस्ती बुलंद थी इतनी
उसके हाथों में जो फरेरा था,
खून से सुर्ख रंग था उसका ।

मौत इतना गुरूर मत कर !
आग जो उसके दिल में रोशन थी,
हर चिता मांद उसके आगे है ।

मौत इतना गुरूर मत कर !
जिस्म कमजोर उसका था तो क्या,
हौंसला आसमान छूता था ।

मौत इतना गरूर मत कर !
'जेहन' इतना विशाल था उसका,
सांस क्यों कर समेट सकती थी ।

मौत इतना गुरूर मत कर !
धरती इतनी बुलंद है उसकी,
वो तेरे दायरे से बाहर हैं ।

□ नीलू

# का० बी टी आर को लाल सलाम

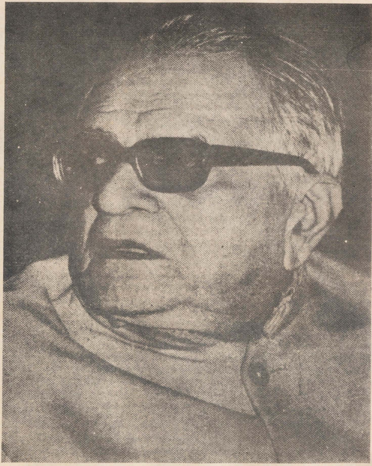

जन्म : 19 दिसंबर, 1904 मृत्यु : 6 अप्रैल, 1990

मई दिवस समारोह की शताब्दी के अवसर पर सीटू, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रवाद का परचम उठाये रखने, मार्क्सवाद लेनिनवाद के मूलभूत सिद्धांतों की रक्षा करने और एक समाजवादी राज्य स्थापित करने की मई दिवस की परंपराओं को आगे बढ़ाने के कामरेड बी टी आर के आह्वान को कामयाब करने की शपथ लेती है ।